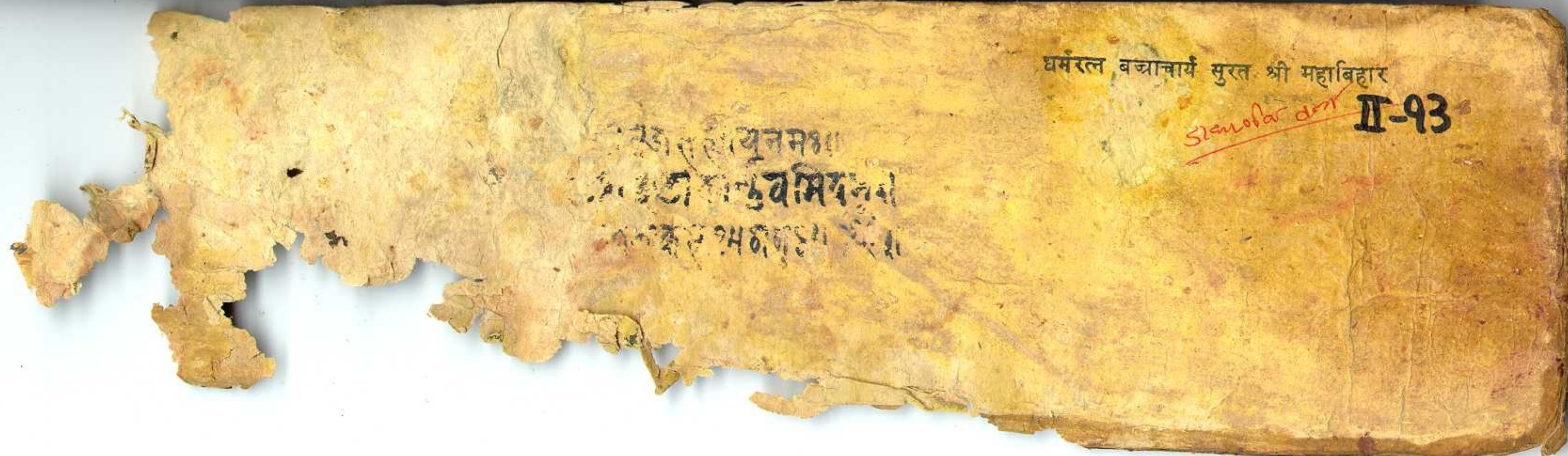






धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

Standard form

II-93

सुखानन्द
सुखानन्द
सुखानन्द

2

अवं गिरादिनीनाहं हनवीहं ननवीहं गवन् । अयं समायातासक विभ नया गिती ॥ नूयाना विदाह्या आदान विधिकर्म
 मा। यायसा विधन नैशाना जीतीहं कथं । नष्टं सुखमयं सत्त्वं अन्नना सोपनी भवी । वड्डा कीधहा वषुपनमा का नयागवान
 वभूशु योशोकारुहं वरुहवचनं क॥ पी। अपी। अदिशु यं पुत्रिना दिधुमधका यायस्य दवतायत्यै सागि स्यं म्रुदनी । त्वया प्रयो
 कीयमानं सुदृष्टिं त्वया मन्त्रिना । अशु सुयं सुगवन् नैक कर्ता धिदवता ॥ ॥ वृत्तं हं हगवान वडी डा किनी ना सुख
 ददडा अनादिनिधेयं या मीयादभायनरुहं ॥ नाहं भुम्भु विंथा निवा हा सव स सुदृ । सीह वान वरुशौ किं ववहा वी ना कोप
 नै । यामाहं गयथा दग्निगथा ॥ हं सुदृ वी । एक हा ववहा सा दव रुहा वरुदकनी । न कौन का रिहा वी सिं वी सव न सी विगु ॥ ॥

४

अ२

तल्ल

नामः

निर्वसकपादानः

मिना विपलसु रुडा हि गवन् पदी ॥ एहायायाम नैक मने नूय दवतर्म न्ये की । नया गमन विवाग अ मध्म मानि पवयत । न वं ह्या त्वा
 सदा गमी । वेहं विवकादि की । अन्नं वदी सदा रुहा । नैक मने नूय दवतर्म न्ये की । नया गमन विवाग अ मध्म मानि पवयत । न वं ह्या त्वा
 की उत दीन मीदी । विवाग मयं माने नूय दवतर्म न्ये की । नया गमन विवाग अ मध्म मानि पवयत । न वं ह्या त्वा
 रुहा ॥ ३ ॥ अन्नं वदी सदा रुहा । नैक मने नूय दवतर्म न्ये की । नया गमन विवाग अ मध्म मानि पवयत । न वं ह्या त्वा
 गनं जाय विवकादि की । अन्नं वदी सदा रुहा । नैक मने नूय दवतर्म न्ये की । नया गमन विवाग अ मध्म मानि पवयत । न वं ह्या त्वा
 नक मीदी मने नूय दवतर्म न्ये की । नया गमन विवाग अ मध्म मानि पवयत । न वं ह्या त्वा

पु. वि. मार्गिक ११५

[illegible]

वी श्री श्री श्री वक्राह न (महसुहिकहसुभिन्नं वक्राह न (म। यवग्रयदि श्री श्री वक्राह न (माहुअगगुमीजाब्दसकअसवहस
 (माससुसपदअकतुह। गितसुहिसदीयनानदवउठूँ ॥ पदवग्रहकाब्दसुहसुअउसमसनिद्रगनरुहड. वन्दहिन्नससस
 गनजावउअदिहसुँ ॥ एववववाअनाहवब्दसुनठिसु। वउसवगिहाकहनदसुहड. कसवदवन्दहिहिनाहसुउमथश्रवागह
 कासुहाता। हानहना। हिनिगुनिश्रीएतवठवाकवा। अउध० उनाहागहनसीतावूँ। धनविहिनायूँ उसकासुनं हीउः
 रुहसी० उयूँ (म। विनिश्री उतिवूँ जासुहपुनं नंददवाडाकहववभुवब्द. पूर्वहिद्रुयमवाहि विरुहूँ ॥ ० ॥
 उवमकाश्रयमकु। हिन्नकमाकुश्रकनाशोयागिनीनोमस्युकाकर्मकानेववाधयत् ॥ प्रकोकस्युमाहात्म्यमकनस्योहिरुनयशवि

लनि
 (कमाः
 सुहिसमहात्मनं कसावाधैरुहउकाः आब्दं विवरायना. सहाउधर्मधाउकाकहनवूँ। मससुन० उपनवउश्वन। पन
 वरुववाधिनरुहविमठरुनवननूँ ॥ पहदकवीउ। उसुहड. माअनासुं रुवविन्दरुवकउ. नसुपुनवग्नहतीठचतुषुकि
 रुयमवापुँ। रुविगिदिहसु। एहूँ यसु। निहसु. कयगहनचउकानरुशायमवकूवाहिबीवूकघहका। पनवहयदिश्रीगतथह
 वीउ. उसवमथहसुयूँ। जासुहश्रववदूः सी० उ। सु० रुकावभुहड ॥ ववग्नं मऊठिअगरुहूँ श्री ॥ नयहउसुनरुहड। जा
 हसडकर्मविश्रु। वनउवीउश्रम। कनं लयू। निहवगजागसुपयमड ॥ सुनि. वीदनि. सुवरुहद। सीसुवहवापुँ सहा
 व ॥ सुवनाब्दसुनमग्नसुस। सवहसुमसुलब्धिसु। निगिरुगहिश्रु. रुह। अवगिन. सुसुत. मजिम ॥ जा० उं वरुनडा. अ

विद्यया यथा म...
लाटउं सदा...

मत्र नायकः का ३

महोका... तासु... कायो... गिरीय...
मशः कपा... नमो... वि...
यहा... वि... वि... वि...
डाहि... वि... वि... वि...
वह... वि... वि... वि...
मथ... वि... वि... वि...

१८

उक्तं विगतं

४८

स ३

ला

कि... वि... वि... वि...
वि... वि... वि... वि...
हा... वि... वि... वि...
वि... वि... वि... वि...
वि... वि... वि... वि...
वि... वि... वि... वि...

मं रं

नी

॥ वृत्तिगीताकार्त्तव

॥ २ ॥ नृधः

ॐ ह्यहं गवा'सामी'वद'क'क'योग'ग'ग'वि'ह'न'नी'न'नी'या'कि'व'ज'ए'ल'४'प'न'स'खी'॥
 महापाणिनीय'क'ग'क'द'३'ग'वा'दी'उ'य'हि'ना'य'की'व'ग'व'क'म'गु'न'रा'व'ना'दि'सु'रा'व'प'ट'स'०'द'नी'यः॥ २ ॥ नृधः
 ग'ह'पु'व'क'प'मि'जा'क'नी'न'ी'य'था'द'यी'। ज'कि'नी'या'ग'म'ग'ि'य'ह'ग'वा'ह'ग'की'उ'नी'। प'नी'वा'वा'क'न'न'रूप'प'स'सु'ह'रि'ग'। ज'स'स'म'व'नी'क'स'य
 ह'व'च'र'द'य'ज'कि'न'न'रूप'क'। का'दि'व'सु'र'म'ग'ि'य'वि'वि'ध'जा'य'त'य'या'॥ ५'य'न'द'वि'ना'डी'व'व'दु'थ'स'ह'ज'य'त'॥ न'म'यः॥ सु'ह'ी
 स्व'र'द'द'ग'म'ध'क'। पू'र्व'वी'द'स'हि'ता'द'वी'न'ग'ं'वि'ख'व'द'का'य'म'हा'व'स'। म'गु'न'व'क'स'स'व'व'ज'कि'प'द'म'ग'य'न'॥ म'हा'ज'न'द'पी'ह
 म'ग'ि'य'॥ द'द'ग'म'ध'क'। पू'र्व'वी'द'स'हि'ता'द'वी'न'ग'ं'वि'ख'व'द'का'य'म'हा'व'स'। म'गु'न'व'क'स'स'व'व'ज'कि'प'द'म'ग'य'न'॥ म'हा'ज'न'द'पी'ह
 म'ग'ि'य'॥ द'द'ग'म'ध'क'। पू'र्व'वी'द'स'हि'ता'द'वी'न'ग'ं'वि'ख'व'द'का'य'म'हा'व'स'। म'गु'न'व'क'स'स'व'व'ज'कि'प'द'म'ग'य'न'॥ म'हा'ज'न'द'पी'ह

१०

वायु

उध

६४

संपदमेत्रमिदम्

क२

द'वी'हि'ता'ह'ग'व'र'पि'नी'॥ व'द'उ'ई'जा'द'ह'व'र'म'कु'शि'न'जा'उ'क'व'दि'। दी'पु'वी'द'क'ता'नी'व'प'व'म'डा'हि'व'नी'॥ स'वा'नू'टा'मू'क'क'म'
 प'रा'नी'र'प'दा'नि'ता'। क'पा'त'मा'ने'नी'या'न'ो'द'कि'ग'उ'म'व'क'हि'। ज'स'म'क'वा'स'व'दा'म'र'व'सी'हा'व'वि'य'ही'। म'ध'म'गु'न'स'स'पा'र'॥ ३
 स'फ'हि'म'पू'वा'स'क'। द'वि'म'क'न'द'य'ज'कि'न'स'ह'स'पू'ट'॥ ४'य'न'द'वि'ना'डी'व'व'दु'थ'स'ह'ज'य'त'॥ न'म'यः॥ सु'ह'ी
 स'द'म'स'य'स'वे'द'॥ ५'य'न'द'वि'ना'डी'व'व'दु'थ'स'ह'ज'य'त'॥ न'म'यः॥ सु'ह'ी
 स'द'म'स'य'स'वे'द'॥ ५'य'न'द'वि'ना'डी'व'व'दु'थ'स'ह'ज'य'त'॥ न'म'यः॥ सु'ह'ी
 स'द'म'स'य'स'वे'द'॥ ५'य'न'द'वि'ना'डी'व'व'दु'थ'स'ह'ज'य'त'॥ न'म'यः॥ सु'ह'ी
 स'द'म'स'य'स'वे'द'॥ ५'य'न'द'वि'ना'डी'व'व'दु'थ'स'ह'ज'य'त'॥ न'म'यः॥ सु'ह'ी
 स'द'म'स'य'स'वे'द'॥ ५'य'न'द'वि'ना'डी'व'व'दु'थ'स'ह'ज'य'त'॥ न'म'यः॥ सु'ह'ी
 स'द'म'स'य'स'वे'द'॥ ५'य'न'द'वि'ना'डी'व'व'दु'थ'स'ह'ज'य'त'॥ न'म'यः॥ सु'ह'ी

६३

क

श्रु
न

कथं वृद्ध धर्म प्रहृष्ट इति ॥ अथवा ॥ अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥ अथवा ॥ अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥
 लुटं विवाचन न मयि यं कथं अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥ अथवा ॥ अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥
 यथाक्रमी ॥ अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥ अथवा ॥ अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥
 नयं पूर्वमप्युत्तं ॥ अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥ अथवा ॥ अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥
 अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥ अथवा ॥ अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥
 वृद्ध धर्म प्रहृष्ट इति ॥ अथवा ॥ अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥

दास वृद्ध धर्म प्रहृष्ट इति ॥ अथवा ॥ अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥
 कथं वृद्ध धर्म प्रहृष्ट इति ॥ अथवा ॥ अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥
 हागी नै प्रवृद्ध धर्म प्रहृष्ट इति ॥ अथवा ॥ अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥
 यं प्रहृष्ट धर्म प्रहृष्ट इति ॥ अथवा ॥ अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥
 मथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥ अथवा ॥ अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥
 यं प्रहृष्ट धर्म प्रहृष्ट इति ॥ अथवा ॥ अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥
 वृद्ध धर्म प्रहृष्ट इति ॥ अथवा ॥ अथ धर्म प्रहृष्ट इति ॥

॥ ५॥

[illegible]

॥ॐ ह्यारुगवा न्वामी

॥००॥ तिग्रीजका गूँव महासागिनी कनुरा करव भुवा

॥ अथ न्यैसैपुवकामिहमा

22

सूर्यवानप्यामितिः सा गतिर्नामिमांषेष पक्ष द्विगतिः कलान्। हृदयारव्यांतथा प्रोक्ता १

अयुर्दी २

[illegible]

केमहंभ... ॥ दितीयं धर्म कायेव सीतागंशु... ॥ साधुनिर्मितकायादिना हि ह्यत्क... ॥
 ... ॥ नागनामा कर्मसंभववर्षा... ॥
 ... ॥ धर्मसंहागनिर्मितगमिनी... ॥
 ... ॥ उद्गतायुक्... ॥
 ... ॥ ॐ नमो का... ॥
 ... ॥

३१

दुर्कर्मना... ॥ कामना... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥
 ... ॥

नमो भगवते वासुदेवाय
 पञ्चमोऽङ्कः संवत् १८००
 शुभं
 शिवा
 निर्वृत्ति

३०
 ३१

वंशोत्पत्तिर्लोक...
 कासु...
 पदमि...
 निपद...

३०

३१

३२

कदाहामन...
 द...
 म...
 ल...
 र...

थ
डा

सुकर्ममंत्र
ववागदिगुणीवमनकनां अथैवमहादेवीनलद्विनादेवनाम ॥ पथमकाकवदीकैपतिमं मागुपप्रकां नकनादिषू
दनैयश्चादकैल सुविही मापमकहिगलादुखानः सासुववनाद ॥ एकवसूवसाखात्मा जदियाविनिधवभातादृगीवान
पुनैपश्रादु विनीकमापकनामथनीवाधोगश्रमादात्सुवीसिद्धिरुतादयाता ॥ सैमगमया मनुतमुश्रुतादभमश्रुदिना ॥ पुनरु
एवसुखवात्रिहृलिंगहावलावनी ॥ द्विपदवदुष्यादादीनैयायामा अविशयेकी ॥ निर्दलितद्वतानिर्लेदभनस्यभनपिचोपीतव
महमहावोदी ॥ गभनूयिनी सन्निहा ॥ वरुमनुत्तमश्रुपुष्टपायसूत्रपिकी ॥ सिंहश्रवण ॥ मकनामूपदीपनिवाशिनी ॥ मनुक्तिग

ना ३

३८

सिखा

या ४

का

कुंदवीनाखलकशापकविनी ॥ ० ॥ उंवदं ऊं ह्रासुककनानासासाययमू हूं खूं ह्रीं पूं दूं मरुयदूं स्वां हूं हां हूं उं दूं रुं दूं स्वाहा ॥
ॐ त्रिपुं ह्रीं भूतकीनायकीवयगिनी ॥ मधुसूयनाद्यामुं एवितायागमातवी ॥ मृदुद्वयं मदीपा लोपाकपगी आसूयानिहुका
रासूयद्वयपाणीकीतुका निरुणायत ॥ द्वाविगद्वयपां तावैव मृदुयश्रुपा श्वतः ॥ वजाष्टरागिकी दार्वनाहिएमनुतसूमी ॥ गिला
गिकी वंग हूं ह्रीं कृत्तिकादराश्वती ॥ तदेकराबी देवकी मरुतां नुतमया ॥ कटितागिकी माल्यं वज्रपद्मनुवक्रकी ॥ श्रवश्चक्रमथ
वंदीनादकैलसुखनै ॥ सुखानि एवमादया न्यद्विपुवक्रकी ॥ वनीश्विगुयी विद्यावात्रिहृहादावहागिकी ॥ तदवदन ॥ वद
नाहिकैल

सुगत

...गन्तव्यं ... सर्वं ... ॥ ११ ॥ अथ यमद
 ... ॥ ११ ॥ अथ यमद
 ... ॥ ११ ॥ अथ यमद

४२

१०

... ॥ ११ ॥ अथ यमद
 ... ॥ ११ ॥ अथ यमद
 ... ॥ ११ ॥ अथ यमद

फ
क

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कवचं यत्पूज्यं नमस्तस्मै तस्मादधिकी एव कुरु कर्मणि कायकाव रुकाय की ॥ यागिनी पूजनं कुर्याद्दिना
महुरुक्तं त्वेनी योषामस्य यं यत्तं मकं वृत्ते सापय रुक्तं ॥ ॥ ॐ ह्याह गवान्वासी वज्रज कलुषा गतः सर्ववी न समा
यागमिदं कुरुतः पदं पूर्व ॥ ॥ ॐ किं यो जकार्त्तु वमहा यागिनी गुरु नाजय मद्रु स्य हिल क मदि मद्रु वं न
वज्रगावमा पदमार्क पगः पटतः द्वादशः ॥ १२ ॥ अथागायमद्रु ही तु कथं गुरु सा सुती सत्ता न वि स नो दा
सां द्रुया स्य निपेजं वै ॥ यागै कर्म पुं क्वी गं ता सवध कर्म गः वदु ना गो नि धर्मा गिय गुरु हि ता निव ॥ नृप मा ध्य कार्त्तु ति
शुभा मध्यम सुक यत् ॥ अथुला मद्रु स द्वाद मर्म वध तु ल क य ॥ न कर्मि यदि का स तु वि श्व नि ता स का य री य मा ह न ग दा वि धी

४४

श्रीपुत्रः

८२

विद्यमाना यत्तं भयः पादस्य तासु की विज्ञाय दिता हि वि श्व नि ॥ द्वितीया ह एव द्वि विम वगी रुक्त वधु वा विज्ञा पादस्य तासु का यदि व
रुदि वि श्व नि ता मा सुय नापि ए क स वसी ग रु ॥ पादस्य तासु की विज्ञा नासि का यदि वि श्व नि ता मा ह न ए व स्य रू द्वा पिः
नासि र्भयः ॥ रुदि पुत्रा व का स रु हं द्वि को ह व ग यदि ॥ ग स्या म व तु व ता या वि ध र्भ मी य ग रु वी ॥ पूर्वा रु प व वा स र्भ म ध्या द्ग द ग क
तथा ॥ अथ वा रु प रु क रु म् रु द्वा व मा रु क ॥ न क र्त्ति न व का स रु हं द्वि का या यदि पूर्व व ता का स नि य म न डी व रु ह व ग ता रु र्भ
म रु नापि रु का या वि वि श्व र्भ व रु हं स रु स रु व रु ॥ ग स्या म रु वि ज्ञा ती या रु व ग ता रु र्भ य रु ॥ जि का रु र्भ द र्भ नै द वी रु या ह म व र्भ
म रु रु ॥ अथ वा रु प रु क रु म् रु द्वा व मा रु क ॥ न क र्त्ति न व का स रु हं द्वि का या यदि पूर्व व ता का स नि य म न डी व रु ह व ग ता रु र्भ

फ
ह

विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ १ ॥ एतन्मन्त्रं पठ्यन्नायं भवति ॥ संपादकः ॥
वृत्तान्तं यदि ह्येवमुक्तं ॥ २ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
गङ्गासहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ४ ॥ विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ५ ॥
नीलकण्ठसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ६ ॥ यन्मन्त्रं पठ्यन्नायं भवति ॥ ७ ॥
सुवर्णसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ८ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
सहस्रनामस्तोत्रम् ॥ १० ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
सहस्रनामस्तोत्रम् ॥ १२ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
सहस्रनामस्तोत्रम् ॥ १४ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥

गङ्गासहस्रनामस्तोत्रम् ॥ १ ॥ विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ २ ॥
नीलकण्ठसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ३ ॥ यन्मन्त्रं पठ्यन्नायं भवति ॥ ४ ॥
सुवर्णसहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
सहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ७ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
सहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ९ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥
सहस्रनामस्तोत्रम् ॥ ११ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
सहस्रनामस्तोत्रम् ॥ १३ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
सहस्रनामस्तोत्रम् ॥ १५ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥

मिर

[illegible]

५१

[illegible]

नमः

५३

[illegible]

65

गानकी श्रुती वक्तृकृति यत्तु यथा कथा का नृत्तं नृत्तं श्रुतं पनी दुपगापनी नो नदी मदी नो नदी ते सुपाटी द्विपर्वती । द
धी साहापा नागी व म द म सु गी ह गिका गीग की सु व न वि व कु नदी दुर्हि क का ॥ नाग कान नी म क्ता च पा नी य षू का न नी का ॥
श्रुति न र खो वे ग व नी कू न धा नी तु व क्रिका । कू म्हा गु तु महा देवी व र्म व क स्या द गी ॥ शुक्रा य धी पूर्व व क्त्वा य षू हा पा य मू नृ प का ना
कृपा स म भ न क न र ह मी ध र्म म य क ग ॥ विरु ख हा व शु द्ध र्म सर्व गे व क र्क म गी । ख हा र्म वि गे घ ने वा त्मी व क की तु रु वा व हि षा स
व र्मा मे व वि रु या च का ना हि य था क म ॥ धा न पा नी व स व र्मा च तु ॥ ह्ना ना नि द्वा द गी ॥ न वी षा ठ ग वि रु या ॥ श्रु त ग म् वि व क्त
॥ ह्ना न वि रु ना न हा व त्वा त्म भ न ह ग व नृ प ॥ न्दी नि र्मा ग व क षू र्मा त्म क षू ना त्म ॥ श्रु त सर्वा नि द प श्वा च क द यी तु क थ ग ।

五

॥ वृत्तिविरुद्धप्रथमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ वास्तव्याश्रयचक्रकौतुकप्रकाशनाम् । नक्षत्रादिष्वर्हचण्ड
मात्मके विदुः । पूजाह्मनिडासत्याधर्मविकाकुलवता ॥ गृहविकाकुविनावर्थविकारविभागको । पूजविकारिषकावधमानाउमे
पूजविका । काकावमानसकापासत्यार्थकन आश्रयाभावात् । विकारपञ्चाहाह्नानसाहापस्लिनी ॥ ज्ञावमवर्गीविकासूखावइरावश्च
माभिलिखितासिक्तवैगुर्विकागुनमानिका क्रमावाक्रमानायेयासावृष्टिपापना । सर्वकर्मकनादवीपट्टमित्तकदैमहतस्त्विकव
मसारणाहेतव्यमरुतपूर्ववत् । पहापागात्मकादवीपट्टाद्यज्ञममुने । चतुष्पी ॥ ० सुवक्त्रकर्तृदादगसाहसिका । ह्यानजाकिनीआशा
थं पूजाअदवतीहरी । निजमहामहिमवैरुमिवममन प्रशाली । इत्यादिकायानी । ज्ञाननिवाद्याकागर्क ॥ वलयचक्रनामैव विख्यातमथा

五

[illegible]

दशानां कविर्दुःखं यथा कथं प्रकृतं यथा धीमादिगतमर्कं तु कानं प्रवृत्तं हयं । तस्माद्यत्किं वित्तुं शक्यं तावत्तु वृद्धं प्रवृत्तं वानसः ।
 सर्ववृद्धः समस्तमृदां वैरुपा । न प्रसीदतां । मनुजापि हि कुर्यात्तु पदेनैव । दिके विमर्शे चैवादिमूर्तेः सर्वं तु कथं पूर्वकः । महासूया
 दिके दिव्येः सर्ववृद्धविवर्तने । पूजायेथा तु कात्मानं सर्ववसुधै रूतवे । अन्ते यस्मिन्निवर्त्तते नूपा नूपादिदं वगी । पूजिता वक्तुमस्ति नृणां
 त्वनं सर्ववर्कः ॥ ६३ ॥ समुत्तमं कथं महासूया उवाच गजाननं प्रवृत्तं यत् । सुदृष्टिं श्रुत्वा सुबुद्धं गमनं हि सुमनुत्तमं हि सुहृद्विना
 उवाच नृपतिः स महासूयः कथं विनाशं विनाशं प्रवृत्तं यत् । विविदे नृश्रुतिं कथं प्रवृत्तं यत् । विविदे नृश्रुतिं कथं प्रवृत्तं यत् । विविदे नृश्रुतिं कथं प्रवृत्तं यत् ॥ ६४ ॥
 वसिष्ठ उवाच महासूया मनुजस्यैव कथं विनाशं विनाशं प्रवृत्तं यत् । विविदे नृश्रुतिं कथं प्रवृत्तं यत् । विविदे नृश्रुतिं कथं प्रवृत्तं यत् । विविदे नृश्रुतिं कथं प्रवृत्तं यत् ॥ ६५ ॥

506/157

[illegible]

१६
 गीयकाष्टकाकारकं वक्ष्यते ननु पूर्व गीयकीयं वायुं वधवरीकं ॥ अथाहुवर्गगुणवायोपार्थिकं तथा ॥ दक्षिण
 गीयं गुणवायोपार्थिकं पूनः मध्यमा गीयं गुणपवनाग्नेयकागक ॥ अथैष पदविहृतो सर्वपायविनामनी द्विगीयकाष्टः
 काकारकवर्गगुणवायोपार्थिकं ॥ द्विगीयकाष्टकाकारकं द्विगीयाकवर्कविहृतं वधुर्थकाष्टकाकारकं वत्तावधुहृत्कं ॥ द्विगीयाकाष्टः
 काकारकं सप्तमाकवर्कं सप्त ॥ पश्चिमाकं तजानीया पूर्वमकं कुर्येकं ॥ उरुवापथमं गुणैः सप्तमाग्निवीकं ॥ तथैव द्विगीयं वीकं मूल
 नापथमाकं ॥ तथैव द्विगीयं वीकं ॥ पश्चिमापथमं वीकं ॥ अथैव द्विगीयाकं ॥ वायोपार्थिकं वधुर्थकाकारकं ॥ वायोपार्थिकं वधुर्थकाकारकं
 वत्तावधुहृत्कं ॥ तथैव द्विगीयं वीकं ॥ अथैव द्विगीयाकं ॥ वायोपार्थिकं वधुर्थकाकारकं ॥ वायोपार्थिकं वधुर्थकाकारकं ॥

५ वृ

काउकाह। पंचमं तव काह। ^{१०}मध्यमापुथमावीडीवायोमा
हृदयैतथा॥ पश्चिमापुथमावीडीवायोमाहृदयैतथा॥ उरुवेष्टानिर्मगृह्णमध्यमापुथमाहृदयैतथा॥
माकरी। नेष्टयादिगीयवीडीवायोमाहृदयैतथा॥ दममापदमिष्टवैमकुल्यइष्टहृदयैतथा॥ दिगीयकाहृदकाजाकमूलनाशाहृदयैतथा॥
पुनः॥ दिगीयाकरीविष्टयाउकादभनमृदिना॥ वष्टकाहृदकाधनववृथकनकीविष्ट॥ वृथकाहृदकाधनवृथकनकीविष्ट॥
माकरी। वष्टवराहृदयैतथा॥ दममापदमिष्टवैमकुल्यइष्टहृदयैतथा॥ दिगीयकाहृदकाजाकमूलनाशाहृदयैतथा॥
दक्षिणापुथमाहृदकाजाकमूलनाशाहृदयैतथा॥ पुनः॥ सेवगृह्णमध्यमापुथमाहृदकाजाकमूलनाशाहृदयैतथा॥

३१

३ वीडीदेह्युग्निर्कैतथा॥

१००॥ मनाववृगकरीवमृत्सेषवनसंगद॥ उकादभनमृदिना॥ वष्टकाहृदकाधनववृथकनकीविष्ट॥ वृथकाहृदकाधनवृथकनकीविष्ट॥
मकाहृदकासनेववृथकाकनवृथकावष्टमदिगीयाकाकैरुफमनवमपुनः॥ उरुवेष्टानिर्मगृह्णमध्यमापुथमाहृदकाजाकमूलनाशाहृदयैतथा॥
गैगमकदकिमत्याकमकरी॥ उरुवेष्टानिर्मगृह्णमध्यमापुथमाहृदकाजाकमूलनाशाहृदयैतथा॥ पुनः॥ सेवगृह्णमध्यमापुथमाहृदकाजाकमूलनाशाहृदयैतथा॥
वागानिर्मपुनः॥ पश्चिमापुथमाहृदकाजाकमूलनाशाहृदयैतथा॥ पुनः॥ सेवगृह्णमध्यमापुथमाहृदकाजाकमूलनाशाहृदयैतथा॥
माकरीविष्ट॥ पुनः॥ सेवगृह्णमध्यमापुथमाहृदकाजाकमूलनाशाहृदयैतथा॥ पुनः॥ सेवगृह्णमध्यमापुथमाहृदकाजाकमूलनाशाहृदयैतथा॥
नवहृदकाकरीविष्ट॥ पुनः॥ सेवगृह्णमध्यमापुथमाहृदकाजाकमूलनाशाहृदयैतथा॥ पुनः॥ सेवगृह्णमध्यमापुथमाहृदकाजाकमूलनाशाहृदयैतथा॥

四

पवनवीजं च मनुष्यपादौ च मन्त्रोक्तं तत्रैव नृणां कर्तव्यं ॥ मरुदेकादशपैव मन्त्रास्तृतीयकाष्ठकाः ॥ आसने वीजं
पूरीयद्दशमं रश्मिकोष्ठकाः ॥ उरुप्रस्थानि मृगशमीमानमपवनकथा मध्यमापथमं वीजं वायोपाथं विवर्कं पूनः ॥ उरुप्रस्थमासने
पश्चिमापथमं तथा मध्यमापथं गौर्यं मध्यपश्चिमापथमाकुरी ॥ पूर्वाहणीयकं गुह्यं अग्नेवपवनं पूनः ॥ पदसंपदं ममवमनुः
कासाकनागनी ॥ द्वितीयकाष्ठं सूर्यं द्वितीयाकुरवमनुकं ॥ वरुथं ननेव सूर्यं पैवमनुगनेवतु ॥ वरुथं कादशकां नहणीयाः
षष्ठकाकं ॥ नकासासनमाकाकं सफमासफकाष्ठकं ॥ अष्टमी द्वितीयकाष्ठात्मनं सर्वसुखारुवी ॥ पूर्वाहणीयकं गुह्यं दक्षिण
पथमं तथा मध्यमापथमं वीजं पार्थिवं वायुकागतः ॥ उरुप्रस्थमं वरुथं वाक् प्रवाकुरी ॥ मध्यमपथमं वीजं दक्षिणपु

30

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥

वसुधा॥ कर्मापनः॥ पश्चिमदिशि गच्छेत् ॥ १ ॥ मध्यामायादिगीयाववायोपार्थिवमकनै। अलोवपवनै गृह्यमकुर्वि
२-भातिमैपदं॥ द्वितीयकाष्ठसंगुर्क द्वितीयाकाष्ठसंगुर्कः। चतुर्थपश्चिमासनैव नरुनयवमासनै॥ एकमवसुमैव अष्टमैव द्विकाष्ठ
का॥ महासंवाप्तनैमकुर्नागमानाकुर्गुर्कनै॥ भाववन्मैगृह्यमध्यामावतुर्थमकनै॥ पूर्वावपथमैगृह्यनेमृत्वाग्निसुवीरुके।
३-भातिमैपदं॥ त्रितीयकाष्ठसंगुर्कनै॥ भाववन्मैगृह्यमध्यामावतुर्थमकनै॥ पूर्वावपथमैगृह्यनेमृत्वाग्निसुवीरुके।
४-भातिमैपदं॥ चतुर्थकाष्ठसंगुर्कनै॥ भाववन्मैगृह्यमध्यामावतुर्थमकनै॥ पूर्वावपथमैगृह्यनेमृत्वाग्निसुवीरुके।
५-भातिमैपदं॥ पञ्चमकाष्ठसंगुर्कनै॥ भाववन्मैगृह्यमध्यामावतुर्थमकनै॥ पूर्वावपथमैगृह्यनेमृत्वाग्निसुवीरुके।
६-भातिमैपदं॥ षष्ठकाष्ठसंगुर्कनै॥ भाववन्मैगृह्यमध्यामावतुर्थमकनै॥ पूर्वावपथमैगृह्यनेमृत्वाग्निसुवीरुके।
७-भातिमैपदं॥ सप्तकाष्ठसंगुर्कनै॥ भाववन्मैगृह्यमध्यामावतुर्थमकनै॥ पूर्वावपथमैगृह्यनेमृत्वाग्निसुवीरुके।
८-भातिमैपदं॥ अष्टकाष्ठसंगुर्कनै॥ भाववन्मैगृह्यमध्यामावतुर्थमकनै॥ पूर्वावपथमैगृह्यनेमृत्वाग्निसुवीरुके।
९-भातिमैपदं॥ नवकाष्ठसंगुर्कनै॥ भाववन्मैगृह्यमध्यामावतुर्थमकनै॥ पूर्वावपथमैगृह्यनेमृत्वाग्निसुवीरुके।
१०-भातिमैपदं॥ दशकाष्ठसंगुर्कनै॥ भाववन्मैगृह्यमध्यामावतुर्थमकनै॥ पूर्वावपथमैगृह्यनेमृत्वाग्निसुवीरुके।

१०

मध्यामावतुर्थवीरुमूलनस्याकिमैपूतः॥ पश्चिमस्यावतुर्थवृक्षकुकावय॥ दक्षिणस्याकिमैगृह्यमध्यामावतुर्थमकनै॥ वायुमा
अग्निकैअष्टमैव नवीरुके॥ दक्षिणदिशि पदं मकुर्मकर्मशुकावय॥ एकमकाष्ठासंगुर्कपथमैमकुणाकनै॥ द्वितीयादिगीयाक
नैवकादशवतुर्थमकनै॥ दशमैद्वितीयाकाष्ठाविलुवेत्याद्ययैकनै॥ उरुवसुभातिमैगृह्यमध्यामावतुर्थमकनै॥
पूतः॥ नकावसासनैदशावपश्चिमायाकिमैमथ॥ भाववन्मैगृह्यमध्यामावतुर्थमकनै॥ पूर्वावपथमैगृह्यनेमृत्वाग्निसुवीरुके।
गीयकाष्ठसंगुर्कनै॥ द्वितीयाकाष्ठसंगुर्कनै॥ भाववन्मैगृह्यमध्यामावतुर्थमकनै॥ पूर्वावपथमैगृह्यनेमृत्वाग्निसुवीरुके।
मैमावधानवाननै॥ अष्टमैद्वितीयाकाष्ठाविलुवेत्याद्ययैकनै॥ उरुवसुभातिमैगृह्यमध्यामावतुर्थमकनै॥ पूर्वावपथमैगृह्यनेमृत्वाग्निसुवीरुके।
मैमावधानवाननै॥ अष्टमैद्वितीयाकाष्ठाविलुवेत्याद्ययैकनै॥ उरुवसुभातिमैगृह्यमध्यामावतुर्थमकनै॥ पूर्वावपथमैगृह्यनेमृत्वाग्निसुवीरुके।

पू ५

७९

बहुधैकं दिकि मस्योति मवी डी मध्य मापु रजा क नै ॥ नै उरु अग्नि वी डी व अग्ने व प व नै पू नः ॥ बहुर्विंशति पद मर्तु मरु कस्य विदा
 नै ॥ पं ॥ अम काष्ठा स नै व दिकी या क नै ॥ आरु नै ॥ दिकी य न वि ती यै व नै ॥ न व रु थ कै ॥ स भू त्या का न म सौ व दिका षु का षु म पू नः ॥
 पश्चिमाय प्रथमै दुस्यै व वा स नै पू नः ॥ वा यो दिकी य वी डी व म प व मी ग का ग का ॥ ॥ दिकी या क न वा यो व व रु ग स न म लि नै ॥ ठ रु व
 स्या कि मी अ न्न म न म प व क था ॥ वा यो द्वि व रु व वे व म प व मी ग न का ए वा ॥ पू न वी यो दिकी यै व व रु यू कै व का न य न ॥ मध्य मा पु थ म
 वी डी नै म स्या अग्नि वी डी कै ॥ उरु व स्या कि मी अ न्न मी ग न व व रु ग क था ॥ वा यो मा रु न्द कै अ र्थै य व न स न या डि नै ॥ पश्चि म स्या दि म रु वै य
 अ मा रु पू न स थ ॥ ॥ नै म व व रु गै ग रु व रु का क रु या ड य न ॥ नै म स्या व रु कै अ र्थै पश्चि मा या स नै क था ॥ दिकी ग स्या कि मी अ न्न म रु वै

व विंशति पद ॥ दिका षु मा ए सै यू कै प थ मा क न कै वि डः ॥ दिकी यै दिका षु का रु स षु क नै व या ड य न ॥ न व मी स फ मी का षा न व म का द म
 क था ॥ द्वाद शै दिका षु का व रु द र्शै ग नै व रु ॥ नु का द म का न म स फ द र्शै दिका षु का न ॥ अ स्या द र्शै स फ म न अ न क स ल्प र्थ कै नै पः
 नै ॥ नि म्म र्ग का यि कै वे व स र्वा सी प वि पू न कै ॥ अग्ने दिकी य वी डी व अग्ने पश्चि मा प्र थ म न थ ॥ वा यो दिकी य कै अ र्थै मी ग न म प वै पू नः ॥
 दिकी य वा य वा य म रु व स्या ग म रु नै ॥ मध्य मा दिकी य वी डी अग्ने व प व न क र्वा ॥ षड्विंशति पद मर्तु स र्वा रि ह्वा प व रु कै ॥ व रु स न सै यू कै
 व प व मा क न कै व वै ॥ अ स नै वै व का षा रु ए म स्या क न स थ ॥ स फ मी दिकी या का षा द र्शै नै स र्व का म दै ॥ ह्वा न स र्वा रु म रु व पश्चि मा या न
 म रु नै ॥ वा य वा दिकी या द र्शै म रु व रु ती यै क था ॥ वा क स्या वै अ रु म उरु व प थ म क न ॥ व रु स न स मा सी नै म रु व स्य व रु थ कै ॥ अग्ने

एवमभाष्यस्य विमर्शितं पूनः। काष्ठकादिगीयनेव हलीया कनसाहिनी ॥ एतेवसाहिनी कूर्यात्सुकं सेवाधिकीपनी ॥ उरुवसाहिनी मे
 अक्षपपनमभकागका ॥ उरुवसाहिनी कूर्यात्सुकं सेवाधिकीपनी ॥ उरुवसाहिनी मे
 नेमस्यविवीडकी ॥ अक्षपपनमभकागका ॥ उरुवसाहिनी कूर्यात्सुकं सेवाधिकीपनी ॥ उरुवसाहिनी मे
 दिष्टाविमर्शितं। दिष्टाविमर्शितं पूनः। काष्ठकादिगीयनेव हलीया कनसाहिनी ॥ एतेवसाहिनी कूर्यात्सुकं सेवाधिकीपनी ॥ उरुवसाहिनी मे
 हलीयास्यमेयास्यदगमीगुदिका ॥ उरुवसाहिनी कूर्यात्सुकं सेवाधिकीपनी ॥ उरुवसाहिनी मे
 यवीडीवनरुयुकमूवावनी ॥ उरुवसाहिनी कूर्यात्सुकं सेवाधिकीपनी ॥ उरुवसाहिनी मे

१२

समयादिनी वायोदिनीयवीडीवपश्चिमस्यतिमीपूनः। उरुवसाहिनी मे
 नी। उरुवसाहिनी मे
 यवीडीवनरुयुकमूवावनी ॥ उरुवसाहिनी कूर्यात्सुकं सेवाधिकीपनी ॥ उरुवसाहिनी मे
 इति। उरुवसाहिनी मे
 नी। उरुवसाहिनी मे
 यवीडीवनरुयुकमूवावनी ॥ उरुवसाहिनी कूर्यात्सुकं सेवाधिकीपनी ॥ उरुवसाहिनी मे

शू
क

नकासकासधमा... नवेतसयोमाहनुकंरथा।मधमापथमैगमकपश्चिमस्यादिमकने॥
 उरुनस्य... न्याससर्वधर्माभीपेवेविमतिमैपदे॥द्वितीयकाष्ठकात्तर्गद्वितीयाकनकी...
 त्रिकाष्ठनस्य... उरुनस्य... नचतुर्थीसुनदयात्मधमापथमनथा॥दोकिमस्यपथमैठु
 वायोद्वितीयवीजकी... नचतुर्थीसुनदयात्मधमापथमनथा॥दोकिमस्यपथमैठु
 निमैपुनठानेपस्याद्वितीयेवीजपुथनोहवमासनेपश्चिमस्य...
 दोपुथमपेवमासनेवनवमाकाकठगीयकी॥चतुर्थीवहगीयननवमैवद्विकाष्ठका।दशमैवहगीयनउकादमैद्विकाष्ठका॥पुणद

१४

१५

क६

मेवहा

या।

म

२७

अनुकनेवकितरुहानवादिनी... उरुनस्य... नचतुर्थीसुनदयात्मधमापथमनथा॥दोकिमस्यपथमैठु
 वायोद्वितीयवीजकी... नचतुर्थीसुनदयात्मधमापथमनथा॥दोकिमस्यपथमैठु
 निमैपुनठानेपस्याद्वितीयेवीजपुथनोहवमासनेपश्चिमस्य...
 दोपुथमपेवमासनेवनवमाकाकठगीयकी॥चतुर्थीवहगीयननवमैवद्विकाष्ठका।दशमैवहगीयनउकादमैद्विकाष्ठका॥पुणद

पु
न

ननसुहृ॥पश्चिमहृतीयमुनेमयादिगीयेपुनः॥दत्तमदासनदयात्यश्चिमस्याकिमकथा॥ॐभववान्मायुःकप
श्चिमहृतीयेपुनः॥पार्थिववायुकोभवपश्चिमस्याकिमपुनः॥पेनानेतर्यकाविभवेतुश्चलाविभपदी॥पेवमकोछासनेव
युधमेसाहनेविशुः॥द्वितीयकाष्ठसर्गवद्वितीयविशुनापुनः॥हृतीयेद्वितीयकाष्ठहृतीयावेतुर्थकरी॥पेवमेसफमेवे
वद्वचसफसकाष्ठक॥पश्चिमसुवतुर्थमुनेमयाग्निवीरुकी॥उरुनाकिमासनेवपश्चिमस्यगुणायकी॥श्रुतेवपवने
गृहमध्यमापथमाकरी॥वैकिपूर्ववनेमयामग्नेवपवनेपुनः॥नवमकोछकाकाकीमकुसुदितीयाकरी॥द्वितीया
काष्ठकासर्गवद्वचसमकरीपुनः॥सर्वधर्मतिर्यमकुपेववत्ताविभपदी॥मध्यमापथमेगृहवविनिनासनदीपित॥पश्चि

१३

४५

५

मां १५ चनेमसवक्तिवोजकी॥दक्षिणस्यागिसंगृहकायवोजेत॥थेववा॥१॥गत्समायुर्न॥

४६

॥मस्यवतुर्थमुवायोवद्वितीयाकरी॥उरुनाद्वितीयासनेगृहसद्वत्ताविभमेपदी॥मिध्यमापथमेगृहव विनाभनदीपित॥मकं
पश्चिमस्यवतुर्थमुवायोवद्वितीयाकरी॥उरुनाद्वितीयासनेगृहमिभमिपुनः॥नवमकाष्ठकाकाकीपथमाकरी॥गृहीयपेवसपे
वसग्नाद्वितीयाकरी॥हृतीयाकाष्ठामकुसुपश्चिमहृतीयाकी॥नविश्रासनयुकीवपूर्वकायाहृतीयाकी॥पार्थिववायुकोभवतुवेद्वितीया
करी॥वकुसुकीमवाग्नेनाग्नेवद्वितीयाकरी॥मिथुमपुनमिमेवॐभववान्मासने॥पश्चिमस्यपथमेवशासनैवाहृनाकिमी॥पश्चिमस्या
४७मिमीमससपवत्ताविभमेपदी॥उकाद्वितीयाकी॥पथमेमकनापरी॥द्वितीयाहृतीयावश्रुतुगनेवतु॥दममेसफमेनेवमकुसुर्वस
मिमीमससपहृतीयाकरी॥वकुसुकीमवाग्नेनाग्नेवद्वितीयाकरी॥पश्चिमस्यपथमेवशासनैवाहृनाकिमी॥पश्चिमस्या

五

[illegible][illegible]

१२

五
五
五
五

[illegible]

या मर्त्ये मर्त्यमायुः ॥ १ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 हिमं माया हिमं हानं विदे वदितुं द्यादकं ॥ ॐ सर्वं नमो हिमार्थं सुखं माया प्रकं विदः ॥ विनायक दीप्यत नवैवा वनमुक्तसुखी ॥ यममायुः कर्म
 नी विद्या या मिनी नै निन यग ॥ सर्वकालं कर्तुं कुर्यात् ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नी नो म नार्थतः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 भक्त्युक्तं च तत्त्वलिच वने धर्य ॥ नृपा नृपै ह वरुष्या मिनी ववे वा वने ॥ सुखं च इः स्वकं ह्यसौ मवसु दिव्य मूद्रया ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 स्वासी वड्डा कुरुथ गतः ॥ सर्वे वीरसमाया गभदुःखं सत्वः पदं सुखी ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दिकवचनका विधिपटलः ॥ १८ ॥ अथ पञ्चनरुम्भं च कवचं च काकुत्थाह ॥ नागनरुं दीप्यमानं गि
 षायानि मरुद्विकाः ॥ स्वाहा हूँ ॥ मनुवर्को वड्डो मां माहनी नायया ॥ प्रह्लापाय स्वाहा वरुणा का भवतु नायक ॥ मरुवपयमा
 हनी वनका वसुत गसकौ ॥ आत्मा ह विन्दत यागी जिह्वा जिह्वा निमीतुर्वी ॥ पनमानन्दं पूजयेत् न ह्यनी न च ह्यनवान ॥ दम
 नीतिस्वविहं वनवना नीषु दभनाता ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कीर्त्तनाना विभीषाकं ॥ पूजाया विद्वान्मात ॥ ॐ सर्वं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ सर्वं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ सर्वं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 वी ॥ माहनीतिर्वचनं ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

७
६

कृतिगोत्रं कर्तुं न शक्यं । गिनीकृतं वा अथ वमा अदिकं वचनं कृतिविधिपटलः द्वाविंशतिः ॥ २२ ॥ अथ वलिगत्वं
वक्ष्यथा वदन् पूर्वमक्षधर्मादयान्कर्तुं न शक्यं वलिदया अथ विधिः ॥ जकमूर्तिन्या गन्धः कवचादि वक्रान्यूनः समाधिमासं
वयं रुद्रपमहागुह्यकापयन ॥ वाञ्छेनाश्वासिकं कुर्यादवधूनाया निमासिखं ॥ नालीम (आर्द्धं वधुं वपमहागुं विकल्पय ॥
पैर्वा कालिका मूर्तिं वसुमवसे सर्वेका वयं ॥ सुधाम कदहनादि सर्वमासायनानि च ॥ कासनें सुखविकृतनापनेनागर्वेदिना ॥ ७३
साधनं यवमासानं मृगीकवर्गे पूनः ॥ ध्यानमूडा मुदातं मृगधियानेका वयं ययि । आमक्यन्तु जाकिन्ना मूडाया गन्धुयागतः ॥
कृत्वा गृहीतं रसमध्यसूत्री नुमृदुष्ठवर्जं । दृष्टं पुपी श्रुतं कृत्वा गोवत्सतादृशतादृश ॥ आवर्त्तवर्त्तनामयति आजा कया

यार्हदृष्टिमन्त्रिभाः कृतं यवमृदुल्लान्नभादयः । दमदि (गुह्यक कृत्वा वयानिन्वा कर्षितं दृष्टयमूडाधनवा वामदक्षिणया
गतः । वामदक्षिणया मित्वा मर्कजाकिनी सुखं ॥ ॥ ॐ श्रीवन्किहाः ५३३ वंहाः वज्रजाकिन्वा समयस्वेद (अर्द्धः
वर्जं नुमृदुर्विकवा वलिदया निमर्द्धकं ॥ ॐ खखखादि २ सर्वयकना कसा सख्यपतपिभावात्सां दापसां नजकजाकि
न्यादयन्मैवलिङ्गकनुसर्वसिद्धिप्रयत्नकृत्य (थष्टे ३३ थपिवथ मानिकमथ ममसर्वाका वगया ससुखविशुद्धयममसहा
यका एव नुमृदुर्वदृष्टस्वाहा ॥ मरुपवमगाया वगन हवत्कुरुः ॥ हितः । प्राप्ता निवेष्टु विद्विन्ने किमप्यामनूजं सुखी ॥ व
लिहा कुरुवी वागमिना गिनीनामथेववा । एनू मूखासिका यासि मरुवज्रपुयागतः ॥ ययि या गिनीनामैवी नाभं वतं थेव

ॐ
शु

मूर्त्तवीनादयः पूजनाः ॥ ० ॥ अथ हस्तगवान्स्वामी च ॥ कुरुधागतः ॥ सर्ववीनसमायागः ॥ दक्षः सत्वः ॥ परं सुखं ॥
ॐ तिगीजकार्त्तमहायागिनी गुरुवाचं वलिवक पूजाविधिः ॥ पटलः ॥ यथाविंभक्तिमः ॥ २३ ॥ अथ अष्टपुव आभिः
मधुसूतपुत्रातनी हामकुरुं गथाव अश्वाचार्य पूजनी स्वयं ॥ मधुसूतं श्रुष्ट हस्तं वलुमि हागं समीपनः ॥ पर्वतस्थापनीया तुकावयतु
द्विरुक्तं ॥ जानूमां खन लुग विगलिमाशखनत्युनः ॥ उदकन पूनयथा वय इदं कुत कथं ॥ तावत्सुतमर्कं अशु उवाच यद्विवक्तः
नः ॥ आभवे कावयथागी दक्षं सर्वकुरुवी ॥ वलुयत्सुतं गश्रुष्टं वपातय ॥ पाश्चिदेव कुरुयत्सुतं दार्दिगद वपातय ॥ पु
नरुमध्यायत्सुतं वलुगानिव तुर्मछिका ॥ तेषु मध्यायत्सुतं पुनरुमवपातय ॥ समुदायाच्च तुम्यकं दगगः ॥ सट्पी वासका ॥ सुर्मः

८१

गालुठवका दक्षं सुपातुकावय ॥ गम्यं दारयमा गुरु मध्यायत्सुतं दिकावय ॥ किनु मध्यायत्सुतं कश्रु दक्षं गीयत्सुकावय ॥
उयउयका दक्षं कुरुयत्सुतं कुरुयत्सुतं ॥ द्विद्विरुक्तं कुरुयत्सुतं पूटं हयाविवक्तः ॥ पंचवस्मिकसुतं वमधुसादिगुर्गतथा ॥ नका
मविंभक्तिगार्ग दारासुतं प्रमामर्क ॥ सगन्धं गन्धपूर्यं वधूपयत्सुतं नधूपर्क ॥ वलिं महादयात्सुतं सुशकर्म मिहायत्सुतं वरुवीनक
हयातुकावय दक्षं विदः ॥ स्वमिष्यं सुशवावतु वाममध्यायत्सुतं नाहिका ॥ मन्दिनाय हयित्वा तु दुर्ध पातयत्सुतं ॥ तथेवाध्यायत्सुतं
तुवामावर्त्तुकावय ॥ पुवमनिष्ठाम गवर्त्तिदयातुर्वकर्म ॥ मूतमकुच्चावर्गं वरवात्सुतं नीरवकिय ॥ पंचामर्गं पिवत्सुतं वाय
दक्षं सुतिका ॥ विलुक्तं नदिन्याका ॥ पुनरुमवपातय ॥ पुनरुमवपातय ॥ कनवडा ज्ञातयत्सुतं मोहादि

ॐ
५

दत्तं विद्यासागरस्य कृतं न्यायस्य विद्यासूत्राणां सावीज्यस्यादिमकृतो ॥ उदयस्वास्वानासावायुविरुद्धनमीसुता ॥ म
 लिकासुतुषामूलिः सर्वस्यैव कानकाः विनावाद्ययज्ञानवृष्टिमानप्रतिष्ठिताः ॥ सीसावीर्यप्रतिष्ठापकहृदयज्ञानगः ॥
 माकूम्रव्याहिकाकागामिहसूर्यमहासूर्य ॥ यागिनीवनिमानूरुतदाहवषूकावयत ॥ पुनिमविपदास्यामि सच्चिदसुखसुययः
 वीवामननद्वयानिमिगीरुतपूजाययत ॥ कस्तभनिष्ठापयदीमदिवा मभुत्तयेः सहोसद्वर्मादिनिधर्मादयानवषुवा विज्जहाव
 कस्तभनवृष्टिष्ठासर्वकास्तकी ॥ नकावहो नृमासायवकाववज्रसुलका ॥ मकानपुनिष्ठितगुणवगुर्यानादिकी सुगाभुत्तमकसि
 मकृत्तर्षिकताकनमकृता ॥ समयहगवाहृयापुनिष्ठावपुनिष्ठिता ॥ सर्वतथगगपदधर्मधनुस्मानकाः कायवाहिरुपद

२१

हा ३

पूयागिनीनीचकविशुद्धाहगघृपंचकनुर्गमि क्रियानिब्रूनाकवे ॥ विज्जहाव नववर्षे पुनिष्ठावापुनिष्ठिता ॥ सत्तावतावगीरु
 त्वापुनिष्ठासर्वतनुका ॥ यदाप्रमाश्रयागीनीरुतुद्वयपुनिष्ठिता ॥ कर्मकिंद्वयमकृत्वा किनुहिस्वर्यवदिकी ॥ स्वयंवशमहाज्ञान
 स्वयंवशासदवगाः स्वयंवदमयकर्मसापुनिष्ठापुनस्यवे ॥ ॥ अथोदेवप्रवक्तव्यैरुपयासर्वज्ञकथ ॥ विशुद्धिरीमकस्त
 नस्यगमुत्तुसादिदवगाः साफतिरुज्जाना नुत्तुमुद्धि रुज्जायत ॥ वरुर्गुजाहस्रव्यादिवरुर्गुर्गुद्धिमिष्यता ॥ अज्ञानीभुद्धि
 हावहीसुद्धेहसुध्याविमोठमः ॥ सफदभमनाख्यासाहवनिर्माणपाइका ॥ सुवहिनगभृद्धिधर्मधर्मषूजकवाः ॥ गभा
 वरुत्तमहकवविभुद्धिहृदवाहृद ॥ मूरामलादिभुद्धिवसर्वयानाथस्वकी ॥ वरुपमादिहृवैवकी जा अगुजानीवस्वकी
 कवायू

मुद्रि

ॐ
दि

मनुष्य मुद्रि ॥ दधर्म ॥ हस्तकादादभंगविमुद्रिवादनवचकवरुनो ॥ समभनवेंकंविह्याषाउभानकिनी
न। पूर्वमुद्रिविज्ञा रायागुरुत्तमयाहवः सर्वहृद्भानके सर्वसागुद्रिविधानकी। वमुद्रिहानहृद्भानवपुथहृद्भानके
हृद्भानवादिनी। नामसंगीतिमुद्रिमुद्रिगयागिनीतनुकी। मायापमंजुगत्सर्वमगुत्सवकष्यामया ॥ उकीसर्वविदेहानिययगहिवे
नकी। हृयंगुत्सवमायासिद्धान्तकर्म ॥ उपदभगमासानपमिसभीमहासुखी। गप्पिकासुद्रयागुद्रिविमुद्रिवृद्धगवनेः
महोत्सवमनुचउहृवेकिस्वच्छया ॥ वमुद्रपः सगुद्रिह्यादयमनुकल्यानात। वायामनुमयाकः सागुद्रिः सर्वहावकी ॥ ॐ
यविमयालीकसमनसं सर्वयागिनी। धर्मकायिकीगुद्रिह्यासंहागकायिकीवव ॥ विहनिर्माभकायसकायसहृद्भानकीविमह्यादि

२

पुनरुत्सवमुद्रिमुद्रिमिषात। कवचमकुर्मकुमुद्रिमुद्रियासर्वयागिनी। वलिमकुषमुद्रिह्याहृद्भानोतिकमालनी ॥ सहमकुषयागुद्रिसर्वक
लैवकीलकी ॥ नानाकर्मष्यागुद्रिः यागुद्रिः पत्रमार्थकान। वर्ममासुविमुद्रिह्याहृद्भानसर्ववदवताः ॥ किंवदनाहृद्भानविमुद्रिसर्वसो
ल्यती। रयमिन्द्रियमार्गष्यायीहृद्भानवतः ॥ पत्रमाहितेयागनसर्ववृद्धमयवहृद्भानगुद्रिमुद्रपत्रमाहृद्भानान्यागुद्रिमुद्रमयाग ॥ सीकः
पत्रः मुद्रिहृद्भानावृद्धादिहृद्भान। वीद्धयागिनीतनुहृद्भानान्यथासिद्धान्तुस ॥ वाधिमार्गसिद्धान्तवयमझायहृद्भानवका। गयाविद्याहृद्भान
यावृद्धावृद्धादिहृद्भान। तस्मात्सर्ववयमयमुद्रिविमुद्रिकथनपूतः ॥ ॥ ॐ ॥ गहृद्भानगवान्वासीवज्जकसुथगगः ॥ सर्व
वीनमयागुद्रिः ॥ ॐ ॥ सुखपन ॥ ॥ ॐ ॥ गहृद्भानगवान्वासीवज्जकसुथगगः ॥ सर्व

10/11/1958

॥ अथ कथं च कर्म मूलासहस्रं विभं । अथानुनाडीनीवचतुर्वाधिकवर्णिताः ।
 ॥ मकायाया विष्ठावनागना ॥ सामान्य हनुदातावहावकी समन स्रुथा । स्रुतावचतुर्वा
 प्रिया ॥ कंकनी सानमीहस विष्टुला कामिनीयहा । चमिकामानदावीकावचतुर्वाधिकवर्णिताः ।
 ॥ सर्ववउद्यमीमूदिकी पूनः ॥ ॥ उका मुनीदग्भजस्रुदा मुनीदग्भजत । अथैव समान
 समानकं ॥ मानाक्रमपूर्विष्टया सर्वहृगम्यतीपनी । कनिष्ठाकस्यपदमयेत्सीहवानीकूच
 र्थहनुकाहमी स्रुतायादिपत्रध्व ॥ तर्जनीदग्भजयामुमधमीवपदमयेत्सीहवानीकूच
 ॥ वरुपत्रः ॥

३३

[illegible]

५२

卅

शनिवायासर्वसंघिकीगच्छन्निहृदयिबहुधाशास्त्रार्थकी॥त्रुवदासफणिहृयाप्राप्यनसर्वसंपदीवभुक्तियागिनीपह्याइव
नियहकावकी॥वाधियाफिकाभर्मवहायनसर्वयागिनी॥वीर्यमद्विपादास्त्रिववभुक्तियागिनीसदा॥वभुसर्वविंशेषुतकसकी
वद्विगावसुप्रकृतिविरुह्यवभनावेकविरुका॥उचमायाविलाकनभसनामूडगकडी॥सैवृहियवमाथविभ्रकीयोतकभा
वया॥वक्रवदयमवाहिपूर्ववृक्षप्रगस्यन॥आसाकेःवृक्षमृद्विःप्रकोर्गसर्वनाठिकी॥मधुनवक्रमध्वपूहावेयदिमानय॥
वभुकीसम्प्रायुक्तसफणिभक्तककथा॥कयावृक्षमृद्विःप्रकोर्गसर्वनाठिकी॥मधुनवक्रमध्वपूहावेयदिमानय॥
वर्गवृक्षमृद्विःप्रकोर्गसर्वनाठिकी॥मधुनवक्रमध्वपूहावेयदिमानय॥

२१

211

स्वाहा॥ पूर्णगिरीमूषी॥ ०४ प्रवक्ष्यामि भगवन् । पूर्णमासीतु तादृक् चन्द्रादयमहागिरी । जगन्धनं मुच्यते मुच्यते वाङ्मनाक
वलीकृता । पुनिपङ्कतमाख्यायापदं भगवन् । नवानुगमः ॥ ७ ॥ वंशकेकयागिन्यास्तु कृतनामविस्तारः । उक्तेकस्य चतुर्विंशती ॥ ०५ ॥
०६ पूनः ॥ ०७ ॥ नञापनमन्तुवभूकबाहववर्जिता । कासाकावस्ववृपात्मा ईरुका संनवषातः ॥ भूकनोरुवपिभुस्यदिवजा
मृगप्रीहवा । शान्तवानस्पृयाताडीरुहिरुहिकानकी ॥ हृदयवक्रकृतावकावक्रसुहावकादि । चण्डीकृतिगनीत्यादि हृदय
हास्ययोगिनी ॥ ॥ ०८ ॥ याहृगवान्नामीवज्जकाकृतागताः । सर्ववीनेसमायागादृक्कृतः पदसूची ॥ ० ॥
०९ ॥ भिगीजकाभूतमहागिनीतु वाङ्मनाकृतामूषाभिपतिस्वहावविधिपटलः सप्तविंशतिमः ॥ २० ॥

22

११

ॐ
जा

मूयान संपदमपि सुक... ययम विधिः। लेहे वे समुद्रा किपुया गिती से सावधना ॥ अजलिकानाममदन पिषि...
नाजिका वदः। किपीठक डी कूचन कपूर्व सिनर्क स्वयं ॥ कमुनिका वासुमी वारु कर्क लं कासी डनी। महीवी डी मूयक पि
हवने वी डनी। मातगी मर्म नत सै हवै। मकूदहन ॥ वि. मू. सु. न. म. ॥ उर्वया गिगी नाकथा शवाव मूयका ॥ उच्चा बकि सुख मूय
हिपाय सया गिगी। पूनमः या गिगी नाभी मर्ध मानी। जिक्वा उवा उमर्ध मिया मेधुने शुक्ल नर्क मानी। मूयुय गूथं व तिगी पपी म
सापक हयै वा दिङ्ग मानी। सर्वना डपू नर्ध ममर्ध मीत मानी। पकि पिषिगे सयम नके मवस्वानी हकि मूर्ध नवी विदू मूर्ध शुक्ल न
क मर्क ॥ उर्ववपु निष्ठा मका हान वी मर्ध मी। उत्यहि सर्व का सै मूय गिगी लाव हान का ॥ कय कय मूयक निर्मा मी सुला रु मी वा

७८

वगी ४

धिविरुद्र वधरुः मद्रिग सैखया पिय। पृथि वाफ जावायु मूयका मरुत धा रुका ॥ गपिषष्ठ मद्रा रुः ह्या हि नूपा हाना रुका ॥ सुला वं म
मका ह्या वाव पदमर्थ वावकी। उके क ह्या रुनी दवी पहा वगी हान नूयकी ॥ धा रुः मद्रिग काना रु उदय काना रु खेवरी। साप ह्यो हो न सोमा
यवर्हि सर्व सुखालयी। प्रकम मर्म मर्म मूक पाटका रुमा दपि ॥ लावेना पिवि क ह्या ला ह्या वी सै वृहि वरु नात। वरु पा गालया म साह दयक
सर्व नाडिकी। तीवधहन या म साप हाव ह्य कर्न विदू ॥ मीमान मद्रि माद रु उडी या न पीठी गथा। मगु सुवके मधु रु लाव य द वी वना ॥ म
कुसुहा वया म सा नाना रु न मधु मधु मर्ध। प्रह्ला त्या या सा का ये व सफ रिं शनि द वना ॥ ॥ उं कै विका द लय मा गता जिह हव वा मय
उं क मर्क रुय द... ॥ उं द रु वगी य रुं २ रु २ लाहा ॥ वर्म नूय रु पूर्व वया ग सिद्धि स्वयं प्रहा ॥ उं का न मा य रु माः

श्रु
०
५

रुद्रा मूर्त्तिदायका ॥ रुद्रा कृष्णपाशाया मूर्त्तिदीपा कृतवका ॥ वरुदप्यमर्त्युर्ववि
मान्नामनकथापनाकासुनयार्थवधुजायुगभूटकी ॥ भक्तिनाई हार्थवकिं किनीजातुके पुनः ॥ सिंहासनमकूटवर्त्तनाना
विष्टनथा ॥ गमतावर्थापिपी ० ॥ शुद्धद्वियसुहावका ॥ वीरमगीप्रया ॥ गनसर्वमद्रापकथन ॥ वीरिसुहृत्तासायीषद्विभक्तवका
सको ॥ कथयतुषुविषयमिन्द्रियकर्मकर्मका ॥ विषयभट्टनथायसुखदुर्वयथाकर्म ॥ ७ ॥ गमसुनर्गर्गहानैसहर्गनायवमुष ॥ नाति
दिनप्रया ॥ गमसुहृत्तापायासकसुव ॥ सुहृत्तागिन्यासुखदुर्वयथाकर्म ॥ ७ ॥ गमसुनर्गर्गहानैसहर्गनायवमुष ॥ नाति
यमद्रादभदभयवह्निता ॥ गमवनायनवृद्धसुखसर्वयथागिनीसुखी ॥ धार्यमानमहादेवद्विदभनर्गर्गर्गना ॥ वेकवायुपुवि

१०१

मर

छसुनरुद्रनूयागर्ग ॥ यद्विपीवनसोत्वायनायुगीहिथगमग ॥ ७ ॥ वीरमगीप्रया ॥ गनसर्वमद्रापकथन ॥ वीरिसुहृत्तासायीषद्विभक्तवका
वृद्धीवक्रमध्वसुनायकी ॥ सुफर्तिभक्तवर्गमकुयुक्तस्वनाके ॥ नानावित्यगहामुसहर्गवीर्यनामनी ॥ ॥ ॐ कपनवृ
पात्रतपाधूपासुनूयसुखतापयसाहयर्ग २ ॥ ६ ॥ सुहृत्तापायासकसुव ॥ सुहृत्तागिन्यासुखदुर्वयथाकर्म ॥ ७ ॥ गमसुनर्गर्गहानैसहर्गनायवमुष ॥ नाति
सर्वयोगिनी ॥ वीर्यसिकमगयसादहिभनसुहृत्ता ॥ गमसुनर्गर्गहानैसहर्गनायवमुष ॥ नाति
पुनिकापानवाच्या ॥ विपतिरिक्तासुन्दरी ॥ नानागमसुनूयसुखतापयसाहयर्ग २ ॥ ६ ॥ सुहृत्तापायासकसुव ॥ सुहृत्तागिन्यासुखदुर्वयथाकर्म ॥ ७ ॥ गमसुनर्गर्गहानैसहर्गनायवमुष ॥ नाति
रुद्रा मूर्त्तिदायका ॥ रुद्रा कृष्णपाशाया मूर्त्तिदीपा कृतवका ॥ वरुदप्यमर्त्युर्ववि

नमस्तस्मै हवतु नमः ॥ किं ननु तदाह ॥ अत्रिनाम गंधर्वः ॥ वायुवक्रपूयानिधावत्वाचार्यमत्यकी ॥ नीयगधूमदाविहंवजवायुप
हृदके ॥ ॥ ॐ ह्रीं ह्रस्ववात्स्वामीवज्रकाकलधगतः ॥ सर्ववीनसमायागधऊसत्त्वः परं सुखं ॥ ॥ ॐ निशीठाकार्ण
वं महायागिनीकृतं ॥ अमृडापुतिमृडावीनमगीत्वरुवविधित्कर्त्तनामपटलः ॥ २३० ॥ प्रकाशयतु ह्रगवां न धातु
कक्षाकायाकाष्ठात्तं वातुकथनं गृहसाधकी ॥ दक्षनाष्टसंग्रहयूषयदात्तं मखात् ॥ पञ्चानुकागयुक्तानमिदं वनमवलीनं ॥ मा
शवाकनयागनदभक्तिकषठाधिकाः ॥ मृडावपुतिमृडाघृतदयत्सुमरीधूनाकं ॥ ॥ कखगद्यद्वैतकुरु ॥ ३६० ॥ उदगं तथेदध
नगंपरुवरुमयैव न सत्त्वहरी ॥ ॐ निशागिनीदास्यति पुतिमृडापूतविर्यं ॥ कोखागघाटाकः वाक्काजारावः ॥ ३७० ॥ ३८० ॥ ३९० ॥

ॐ

१०२

पि६३

नाथसाधनाः पादुवाहमापः यात्रावापः ॥ नवहस्ताविभक्त्या कृपाटसर्वदहिनी । वधुद्वयपुत्रागणसुखीश्वर
 एनिहाः ॥ श्रीविष्णोर्लक्ष्मीकृपायागयागिनीवाद्यय । कर्मवत्त्वाविष्णुनिर्वाणनन्दविरुक्तथा । निकायानिवचकानि नवमया कमा
 निवा ॥ उद्गमनिर्गमकुनिर्दग्धमन्यगंस्मर्ग । खर्ववीचपुत्रागणनृणां मन्त्रिणीविधिः ॥ खसमैवकटमात्रोखवनीचनगख्य । वा
 वाहासुनृपास्त्रानिनाधमृपगकुनि ॥ बहसीविरुवेगानां नाकश्चलणगंस्फुट । नत्तवज्जकनविर्षिदग्धमंळकमकनी ॥ सु
 र्वहृदग्धमंळमाधवानवतुगत्मक । नमश्चनवीर्यद्वियं ह्लातयापवमोडुनी ॥ नागनागविमिश्रं वनसुखं कितकमम
 मानिनाथसुधासुनापवतमासुधमना ॥ सर्वोद्गमं नृणां चरतयाहिः सर्वदहिनी ॥ नवहस्तात्मकं चामी साहि ह्लात्वा चतुर्गुणं

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ वसनाय वासनाय नाम नमो ॥ विवर्तकः ॥ तथा हि ॥ सर्वकामानुयुक्तिं सर्वदहिनी ॥ १०३ ॥
 कृपाय नमो ॥ विवर्तकः ॥ वसनाय वासनाय नाम नमो ॥ विवर्तकः ॥ तथा हि ॥ सर्वकामानुयुक्तिं सर्वदहिनी ॥ १०३ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विवर्तकः ॥ वसनाय वासनाय नाम नमो ॥ विवर्तकः ॥ तथा हि ॥ सर्वकामानुयुक्तिं सर्वदहिनी ॥ १०३ ॥
 मिकीवस्वर्गविन्दनानुपदहिनी ॥ उर्ध्व उर्ध्व कस्तूरगणगतिपुकीर्तिनी ॥ यकाहावनासानीकर्मणो सिद्धदवगा ॥ मूलेननक
 हावा नाम पानसर्वदहिनी ॥ वक्र्यदिगर्हनेन नमो नमो नमो ॥ सर्वदहनी प्रकानी सुवर्तियकस्तथा ॥ मूलेननक
 निदानीनामो सर्वदहिनी ॥ विवर्तकः ॥ वसनाय वासनाय नाम नमो ॥ विवर्तकः ॥ तथा हि ॥ सर्वकामानुयुक्तिं सर्वदहिनी ॥ १०३ ॥

या २
 यदियमुहावपुसर्वापवावलकर्म ॥ सफळिभक्तकर्म ॥ अथावयत्पुर्णदुर्गिका ॥ वडी ॥ गेयो दिवी र्यषकपाटस्तान
 मावभं ॥ १ ॥ पहापास्तकादवीपृथिवीयागवक्रकर्म ॥ मकुक्रवाहवकि ॥ ॥ ॐ मा विवर्तकगटममूपसविहापूहावि
 नतवातयत्पुर्णदुर्गिका ॥ १ ॥ पहापास्तकादवीपृथिवीयागवक्रकर्म ॥ मकुक्रवाहवकि ॥ ॥ ॐ मा विवर्तकगटममूपसविहापूहावि
 यागजी ॥ ॥ ॐ मा विवर्तकगटममूपसविहापूहावि ॥ ॥ ॐ मा विवर्तकगटममूपसविहापूहावि ॥ ॥ ॐ मा विवर्तकगटममूपसविहापूहावि ॥
 श्रीजका ॥ ॥ ॐ मा विवर्तकगटममूपसविहापूहावि ॥ ॥ ॐ मा विवर्तकगटममूपसविहापूहावि ॥ ॥ ॐ मा विवर्तकगटममूपसविहापूहावि ॥ ॥ ॐ मा विवर्तकगटममूपसविहापूहावि ॥
 पननपिपुकी ॥ ॥ ॐ मा विवर्तकगटममूपसविहापूहावि ॥ ॥ ॐ मा विवर्तकगटममूपसविहापूहावि ॥ ॥ ॐ मा विवर्तकगटममूपसविहापूहावि ॥ ॥ ॐ मा विवर्तकगटममूपसविहापूहावि ॥

श्रु ७

पूजा त्वाहुब्दं वनमभुजी। विहृत्तुगत्रेता। हरेयुहावकषकी॥ यन सर्वहगायाम् सर्वयागदर्शननहुगृह्णानसम्
दानुसर्वमूडीनवगगी। नवमिर्नेकविरुक्तुपवाशा। पिपुतु॥ वजाननपुयागनसर्वमूडीपगीयत। नाहिवकषयादवीरुका
सग्नकगभवनी। गत्यागनिसुहावाहुनानानाडिजनकुमाग॥ विदुसूर्यगर्गमूडीविरुवेरुविकासिकी। पृदिमदीर्घनस्वाहुस
मूडाहिमुदीयगा। मूडावपुनिमूडागुपुहायायसुहावकी। वोधिविरुगगीस्वासीनी। सर्वेषुसन्निधौमहादेववीयागनसाधयः
चवित्कमग॥ मायासानूवीकृत्यार्यैकुवाकुसैरवा। हाहाहि॥ सर्वहास्यानिकानयदृकमूत्की॥ सारसकृमसावेधकु
नायकनानिवावासा। सर्वापगगाहरेवीरुमानका। डाडकानश्रद्धावस्यथा। सैरवापुगभवसा॥ उपमागभवम। ध्रुव

१०८

पर

का

वसंजगमीतग॥ सीनेचसर्वहावात्तामूडाहि। अत्रुमविदृ॥ अडु। यामानमाका। मूडाश्वसर्वगभकनै। श्रद्धावगगाहृत्वा
वतवान्सर्वदहिनी। हकमानेमहामानैपिवदुधिमामसी। हनूकीकनगीविद्यावृकमूसुषुहृत्ता॥ गयमगुत्तवकष
महादेवविहाविनी॥ विरुवकसुम। अत्रुमकुनी। कुनैरवान॥ ॥ अंमखहादसवामृगडकैमपाखतनागुय
सुहृदिहंनरुधम। निरुट। मल्लाहृहृहृहृ॥ ॥ अंमहादेववीयहृ॥ ॥ अंमहादेववीयहृ॥ ॥ अंमहादेववीयहृ॥ ॥ अंमहादेववीयहृ॥
कायव। किहृकी। अत्रुमकुनी। नमनहाकामगि॥ ॥ अंमहादेववीयहृ॥ ॥ अंमहादेववीयहृ॥ ॥ अंमहादेववीयहृ॥ ॥ अंमहादेववीयहृ॥
महादेववीयहृ॥ ॥ अंमहादेववीयहृ॥ ॥ अंमहादेववीयहृ॥ ॥ अंमहादेववीयहृ॥ ॥ अंमहादेववीयहृ॥ ॥ अंमहादेववीयहृ॥

श्रु
३०

थः सुकमलविधिः सुहृदयविभक्तिः ॥ ३५ ॥ अथ कमिनायागिनीप्रदार्पकतकावर्गः। कथं कथं पश्यायागीति
द्विहवतिदर्मना॥ ताकपयदावमृदयनीद्वियत्नवर्गः॥ कथं च वकीवनीतपीर्गव्यामकीपीतहवितविशहकर्वुसंधुसवर्ग
की। सिंहंभंमपिअसुतेसिगवकवर्गकीपूतः॥ वकपीतहवितहर्गमीनीतावृधवर्गकी। सिंहमीतहवितहर्गमीमद्यकर्वुववर्गकी॥ कर्वुस
पीतवर्गसंधुसपीतवर्गकी। सिंहसामहवितपीर्गहवितधुसवर्गकी॥ धुसहिर्गकर्वुवनीतपीतावृधविमिश्रिर्ग। धुसहवितवर्गवसिगक
र्वुववर्गकी। कपिसंधुसवर्गकुपिसिगवककापेर्ग॥ मद्यकपिहवितकपिकर्वुवकपिवर्गकी। सर्ववर्गवर्गसंधुसहृदयदर्मवर्गकान
॥ हिमनापनविगानकोनकोनपिरुसकी। अन्धान्यडववर्गवृद्धादभक्तमहाकृपाः॥ आहंजायगंनशुभः॥ सर्वप्रागिनीगिया

११०

हासमाकासुसुसुवन्निमहर्द्विकी। विहायमृदयादाखीसिद्धावर्गदर्मनाग। यदि सुहृदयागमात्मापूर्वपश्चात्समासतः॥ वायु
वगपुयागनहिर्गकनापपी०का। वीर्यवत्सुदयायथयथकनष्वोवातिवाहनाधूयागुमृग्यगवाहनावसात। पुग
पसुर्वधर्मसुदर्मनमार्गसुनः॥ वनिविभक्तियुक्तपुपमार्गहावनासनी। गारसासिगितातलीमकिमार्गनगायिनी॥ शिवि
धमाकर्कश्यैल्लर्ममर्त्यपातसेकी। सममुखेदधर्मववृद्धाताकवहिताः॥ ऊमकादिष्टीयसावृधुवीसूक्ष्मयागनासिकी। नत
सुसुदर्महानेयप्रसुसर्वनासिकी॥ वीर्यसुहृदवर्गमादसुसुहानहानिकी। उर्वहृत्वासदायागीविहवल्कामकामिनी॥ मगुसा
पिगिनीनतकाकवसुवर्ग। कायगुमहादवीसुहृदसुभाधिपती॥ ॥ ॐ वंशातय सुवर्मायवमवर्द्धधमविक्रमवा

अ
३
७

[illegible]

۹۹۹

हनुकैवामहर्कौद्विर्षं प्रदयागं विदुः। सावनामामकीगानापाशुलावनेनासिकाः। वज्रध्वनीश्वरीहयाषद्यावमिनारुथ
। एवं च विविधैर्हयावीराः सर्वजगत्पतीः। किंतिगर्हादिकं कुरुतथाङ्कादिनायकाः। पृष्ठहस्तगतादवीश्रुतीश्रुतधगाना
प्रध्वस्तान्तादवीश्रुतहस्तधगानं॥ नखंभुक्तोत्थावीनाकटकस्तान् प्रयागिनी। श्रुतहस्तमयश्रुतविस्तृतध्वः॥ ययि
स्याधिपतिवत्कुरुतस्तुगस्तुक्रयं॥ सुनाहकिप्रयोगनकीमर्त्तनासिकागतः॥ हस्तगतकल्ल्यास्तुतिवत्तनवात्मना। श्रुतहस्त
हाम्दुः। सुनासर्वकासजी॥ नाहकाताग्निशूर्यकुयहर्त्तस्यहर्त्तथा। हस्तयित्वाविषयीवस्तुक्राद्यनूपिकां॥ कीतिखवत्तमृत्तु
कस्तुर्विहवी॥ एवं कनातिनागिनाहिः सुनयुवः सुसुना॥ कादभुश्रुगर्त्तविहमातासुचित्स्वरूपिकां। समवसात्तादनैवक्रियत

श्री
३
फ

वशुहै... मा... नभगकैवर्षः॥ तस्य मासु यादृक् दानिदं न भगवत्कर्मभग। भगवत्सर्वं
यमुसुवैकुण्ठनवसुहः॥ उकविभक्तिवाचभसिद्यतनाग्रसंगयः॥ अत्र न भगवत्तुलिः सिद्धकर्मदनात्तेकेः॥ काविवि
कृतलोकानामहयदासु दुतचतु॥ कीउरुतुनसिद्धिः मुहिकातिहिः पनीवृत्तः॥ श्रीवज्रवावाहीयागाहूहूकसमाः
यागी॥ वज्रचार्यपवेकसुसर्ववीननमस्तुते। सिद्धिदं विष्णुकर्मसमयावाचनक्तिर्न॥ उर्वहामरुतेसिद्धिः पूर्वाक्रियागया।
गित। नयागमुपवाकर्मनकर्मयागेविना॥ सुकानिद्यादमेः कर्मवायुवादनतागतः॥ हामकुमुननपृष्ठउत्तयसीधिमो
तना॥ दिनाविष्णुमसायाश्च सर्वसन्धिष्यपूनः॥ तस्मिन्कारुष्विह्यामन्तुवनकर्मकनी। ऊपित्वा उवभयुक्कृतसिद्धि

११४

समकतः। कृतीभयलुपकृष्यादिकानपेवाभगतः। काष्ठा निष्ठापयहूमोसुहनाऊस्यसुक्तिगी॥ तद्वेनावनपुथमैसफ
मपूनः। सव। नवमसूकावेदयादुयादभगकावके॥ सुफदभगकावेवउकानविभहंपूनः। उकवि। भगकावेदया
दुयविभगिकावके॥ सुफविभगमदयादककावेयाऊयदधः॥ उकवत्वाविभगऊसूकावेदापयहथा॥ उयवत्वाविभ
द्येवहूनवीऊनियाऊयक॥ उकोनपेवाभमदयादकावेपूर्वसुहकी। द्वितीयकाष्ठपूनदयाददनामादिल्वरी॥ षष्ठः
कावतथाऊयवर्गसर्वकारुतः॥ दशमसूकावेदयाददभगकावकतः। अष्टादभगकावेवदाविभगुपमक
दी। अष्टाविभगकावेववर्गवीभयदीऊकी॥ श्रीवत्वाविभगथातुगकावेदापयत्पूनः। अष्टवत्वाविभगमै

श्रु
अ
ह

श्रीकृष्णनाहते सुदा। मृदुमवतथा कुरु सर्ववर्गस्य पुनः॥ वदुर्देमककावैयमाउमवरुकावकी। विभामश्रुः
कावककुचदुर्विभगकावकी॥ सद्धि। मनपूतदद्यादिभमेवानियाऊय॥ वदुर्दिमपदद्यानुषद्धिमुना कावकी
था। दारवलाविभदूदद्यादुयुक्तुसमासुतः॥ द्वादभानानुकाछानीसाधनामविदहिता। दूकानसर्वकाछानीम
(ध)साधनामसिख॥ मूलमकुंठसमावेष्टवजमाननुकावय॥ युगमवज्जनुसमासिख्यवभकेरुहमोतसु
वज्जदुष्ट॥ समासिख्ययकुंठवज्जसमाहवी॥ श्रुगवृत्तिदामोर्ध्ववज्जधवापिवा। समयवकर्तुयापवाप्रदनिपातना॥
श्रुधामिकनहामनहृत्तयामनुनायकाः॥ ॥ अथकर्मवर्षवश्वीवस्यदयशागतः॥ यागिनीगुह्यपूजावसदासि

११५

अथवप्रदा। पूजायलगावधूतीसर्वराशेवसाधकः॥ विभामश्रुमूलसर्वपुत्रिण्यावदिकृति॥ तावन्निर्गीकर्मगहव
नान्यथाप्रवदाम्यह॥ हूमिसुगतिस्तुतेनपवत्पादलापक॥ तन्निर्गीवतिविदुषीसर्वकालैवगर्भविदुः॥ पाथकुरु
लाहिनीश्रुमन्त्रासिखगानि। समतागानिकावयद्विधिवेप्रमहादपः॥ अर्ककीवगपिष्ठागुतनावर्हिहसिद्धीक। यन्युमाग
मिकृतिवेगन्युमागैरुवतिवृत्ति॥ मीधुमप्रादकनपुकास्यत्युर्वप्रमानी। अथपप्रकमवमधूनापिष्ठासपन॥ दत्तासिद्धि
वगवृत्तिकापिनीवसी। अथपप्रकमववै। अथतिसुतथपवै॥ नवनीतेकवीवस्यमूलमधूनासहकतः। पिष्ठानाहिनप
ननसावन्निर्गीवगति॥ दत्तनीहविदादयैरुगुह्यमवामकिर्त। पुहृदयैकथितवयावत्युक्तैरुवति॥ चकीपीलासफदिवस

म
उ
उ

रागयुक्तं नृपुण्यं वयं कर्म ॥ ह्यकर्म पुण्यं गनकां सर्वं कृतं कः । समाधिर्वाच्यं वदय सर्ववर्त्मिणी ॥ हका वना
दसर्वोद्भादिसिद्धिं तापिव । यकावाहं वगमप्राप्तं वितावकवायुमा ॥ कटिमागुतासानन्दादसदसं किद्रियुनः । कायवा
किरुधर्मात्तावदुर्विभसुदससुव ॥ दादभं नातिप्रसुपुद्रिगयागिनो सुदा । तस्मिन् के कस्मात्ताहि वकनया हयादिकाः ॥
नकावानवसादवीयकायकसुद्रिका । कामधालुश्चात्यन्तामाकुरुपातुकर्मकी ॥ याकावाचनधर्मासुकिः सर्वविः
दाकना ॥ सफर्तिमात्मकमश्वावयत्तावकर्मक ॥ ययिमावकर्मसिद्धिक्रियतु नृदाहक ॥ सासनदाहकवापिगथा
पैवाननयादिक ॥ विषवाक्रिकालवगधुद्रवाभानसमानक ॥ स्वर्गक्यान्निर्वचवर्कलेत्वापुयत्ततः ॥ यमयकुसुदा

११७

तस्य क्रियतानाथवाववापूर्वकिकाष्टकं कृतत्वापुनमातामिसान्यसत ॥ वेवाचनेपुथमदुद्विगायसुविधीयत ॥ हगायेहकाः
वदत्तापेवमवदायकथा ॥ षष्ठ्यकावर्कवेवकावसफमपुनः ॥ मूलेमद्विद्रंकावेवनवमरुकावेगथा ॥ दगमनिकावेववदा
द(म)कावेपुनः ॥ यथाहमरुकावेवगकावेवदुर्दमगतः ॥ द्रुकावेयवद(म)रुहकावेपोठमवतु ॥ सफद(म)सुकावेव
द्रुकावेकावेविभक ॥ विभमद्रुकावेदयागद्रुकावेवकविभक ॥ वेवाचनेकानयिममपुनः ॥ एकविंशमद्रुकावेवययिगवेन
वनी ॥ यदुक्ति ॥ मयाकावेवकावेगयथाऊके ॥ पंचविंशमयवीऊववत्ताविं ॥ मद्रिद्रुगथा ॥ एकवत्तावे ॥ मरुद्रुकावेवत्ताविं ॥ मरु
मद्रिकी ॥ पुनरुकावे ॥ मयमयकावे ॥ दिवकयो ॥ वदुनवत्ताविंममद्रुकावेवत्ताविंममगर्क ॥ सफवत्ताविंममपुनः ॥ यमयकुसुदा

अथ

[illegible][illegible]

१२२

[illegible]

ग्रथः

[illegible]

उवनययी ॥ हाहा हह हह विद्वहा हास्यवजकयागगशयागिनी क्रियत कशखजनीगमनः क्रिया ॥ गृहमवजानीयास्वनासाव
मर्गसदा ॥ हवगसर्वपापाभु इष्टदियविक्षनकी ॥ दर्यसर्वमहायानैनिहाविद्विफकावसाजवजधवास्वाप्तकवसर्वसत्वपुयाजयः
॥ तावद्वजमहायानीयावसाधनसर्ववजप्रसिप्तसर्वधर्मपूहानैरुयात्सकपुव ॥ वाध्वजमनसावजसमनः सर्वधर्मकी प्रवेहात्वा
गुर्वधर्मपूववाधिपुकाभर्क ॥ उवाटनैमहायानैहामनपनिपूवयजकाकमानेपकेस्त्रायगृधस्त्राहियावाप्तकी ॥ इरुयाहनचिरुनवका
नामपुवाटनी ॥ गृधिवृद्धपुताकपुकाकथासर्वजकव ॥ सफर्तिमत्सकमध्वहावयत्पूर्ववर्गिकी ॥ मनुकवपुवायनापुहापायस्वला
सी ॥ उमद्वजमहायानी ॥ इष्टमिहसमकाकर्ममननिहृषाहंदरुटनारुटयत्वाहृहाहंदरुटस्त्राहा ॥ उखगुवाहहं २५२ २

五

[illegible]

१२८

ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सर्ववीरसमायागमद्वयसत्त्वः सर्वसुखं ॥ ॐ मिश्रीकाकार्मुकमहायानि
नीलकुवजसोमिनीपयागवृविद्वषसत्त्वमविधियकुवकसुखावानामपटलशुभ्रत्वाविभक्तिमः ॥ ४४ ॥ अथाव
कवर्मिण्यागुसमाधिकथगहृटासकलैवभनयागमचकवर्मिण्यागमः ॥ सुवर्णदीपकानैवसुनिर्वाधमनगधवाकसाका
नयकुवविधिनम्यापुवर्णः ॥ उषीषतत्त्वमाविकालयकुविचक्रः ॥ दवासूत्रमहायुद्धद्वीहृत्वानावयगः ॥ तस्मिंकारुमहा
विर्षद्विवावर्कसमाधिना ॥ दिनकनसुवनाकुवतविरुष्वधना ॥ क्रमतिविह्वानधर्मविम्वमध्यषुलीनगी ॥ सर्वमहवीतकुकुब्मि
लीपुडासः ॥ अथापिपूर्वद्वयानुवचनयागमद्वयापूर्वापदमपटलैराविर्गस्यहृन्की ॥ क्रमात्सर्वमिदं सूर्यगुफीकृत्यामन

[illegible]

त्वाविभक्तिमः॥ ४८ ॥ अथान्यतमसि (शुद्धचक्रवर्त्तादिपूष्टिका कथयामि समाप्तन कर्म सर्वहितादयः॥ महावीर्यापुत्रा
 गननगुह्यसिंहिननगु॥ वाधियकनुसर्त्तवावाक्कुनववृष्टिका। तैविकायां समाश्रित्यमविन्युवाधिमपुत्रात॥ सर्वकर्मवल
 (शुद्धमहासूत्राख्येवत्। सर्वधनुषसूत्रेण तैवितासाविधायन॥ वदुर्विगतिवीनामभकेकस्यगुनसूत्रे। धेनुसर्ववविह
 यामकिनसुश्रवदकी। पृथक्पृथक्कामेवकथनसर्ववीवकी॥ एकेकीवीनरावयत्तमुत्तमफर्णिगक। अष्टधनुषसर्वधुनिका
 विधेवत्तकय॥ प्रयागेवनामादमेऽखगुकापालादित्नी॥ महावीर्यानिषुविहयावावाक्कादिपूष्टिका। समश्वाद्याटनधागु
 हसूत्रेयामनयत्। वीवत्तः। इत्येवम् विन्दयन्महावत्ता॥ नादमेतैविकाखम् विन्दयन्सर्वधनुक। ह्वात्ताकाविमूढनी

[illegible][illegible]

१३६



श्रु
क
उ

हस्तद्वयस्य ॥ महावीर्यं हस्तद्वयस्य ॥ ॐ सर्वमकुतल्लासा सर्वदवगवीजकी। यत्र वकीतदातल्लाकायेकानपंचा
मकी ॥ कोलीवमसमासुरयमकुमासासिमायसुत। विनामेनहसुमकुयथाक्रमवुविन्यसुत ॥ ननरूपेनदाकुर्यापुनवकुन
माददहामुतमकुगमासुरयसाधनासविदहिनीनुजीदोपुलिखलकीवाक्युक्तुसकयत ॥ ॐ सर्वयकुपुयागनसाधयकुव
नगयी ॥ ॐ ह्यहगवान्नामीवकुउककुथगन॥ सर्ववीनसमाशगमदकुसुल॥ पेनसुखी ॥ ॐ मिश्रीजा
कार्गुवमहायागिनीमकुवाडमहावीर्यायापुयागलकगकुनसायभादिपूषिककर्मशीसंयकीसाधिरूकमुतमकुसुविधि
नामपदसु॥ ॐ कानपंचाभगमः ॥ ४८ ॥ अलाकायसर्ववीनवजपाभादिमकुहि॥ प्रवाधयान्तिवावाकाकुनिपूजाः

१४१

सुवन्दना ॥ सर्वसुखेषुकादुग्धापुपकुल्लात्मनिर्मिती। ममसुखेषुकादुग्धापुसादेकमहमि ॥ पूकुसिरगवन्नामीमहासुखेषु
सुहिता। नहार्गसर्वतकुषुकमपुसुवसाधनी ॥ यदितावरुकुतकुदमितासर्वकर्मकी। तदातुवकनाकाविशुद्धिहाननाः
हिनी ॥ ॐ हतकुवकार्यनैमयुकि सर्वयकुवी। संगयकुमयाहानपुनवकुसुसदावकी ॥ हृष्टीहत्वाहवावाहीपुविश्ववग
वसुखी। यनिमर्गहसाहानमरुमेकधयकिन ॥ हगवान्सर्वधमासासमाधिसानसोक्तग॥ कलाउदीवयदाकुवावासासर्वः
नायिका ॥ हाहासर्ववीनकुहानैरुयविमिश्री। यत्यभनित्वयिहानैसुतकुतकुनीनकी ॥ किनुपुथसुसुथुनानासुखसा
नाममर्गनित्वमहमकुवकुउककुसुसुमर ॥ अन्यपुयागकुनिसमाजादिमहार्थकी। तसुसुवविदहकुनानाविधनवार्थ

अक

[illegible]

788

कलहोदिनपूजाकः। पंचनवदशमनुनमयहृदिकवः॥ दविधधर्मसम्यन्नासर्वगुणसुतेकः। उत्तममाह्वयितुमस्मिदिन
 पूजाकः॥ दिनवममासवर्षयदिनमयनसर्वहीनमानकस्वपापात्माहुइवापय॥ नाहिनादिवसमयवीनादिप्रमावित॥ उर्वसुमास
 गहयासमाधियदित्यग॥ साक्षात्कर्मपूजागानोर्कर्मभानाहुसत्यगी॥ उर्वदिनपूयस्तानसूक्ष्मकर्मपूर्वावहु॥ उक्कदिनक्रममया
 मयगताउसंभयः॥ उषास्वस्त्यनेराश्विमुकपास्तिनस्यरीखार्गगकुतियाताडीतस्यमध्यमृद्वव॥ साधुकापीविकापीयातक
 दसिवाविभा। कायहीहाद्यगगीकनिष्ठापातयहुना। पातयत्सर्वसत्त्वपूजावमापादमरुका॥ श्रुतिकास्तिस्मैकत्वाध्वगु
 नानाकावः॥ उषास्वस्त्यनेराश्विमुकपास्तिनस्यरीखार्गगकुतियाताडीतस्यमध्यमृद्वव॥ साधुकापीविकापीयातक
 दसिवाविभा। कायहीहाद्यगगीकनिष्ठापातयहुना। पातयत्सर्वसत्त्वपूजावमापादमरुका॥ श्रुतिकास्तिस्मैकत्वाध्वगु

शु
क
ह

मन्त्रादिषु कृमादवा रुमृदुयानकुडरुवा दमद्विगुमवत्वा विदना नियटिकै वृधः॥ समकासु पूरुगवा खलुग्रपुवचिऊ निदम
विषष्टिमा रुवऊनी यटिमा रुवग। गगामध्वदिगीशानिया कदावित्ता सुवि। गवतः॥ दमद्विगुमवत्वा विदना नियटिका पयत। दम
दिगीवत्वा विनऊनी यटिकलिते॥ दमद्विगुमवत्वा विदना नियटिकै वृधः॥ दमविगुमवत्वा विदना नियटिकै वृधः॥ विषमध्वदिशा
रुयात्रकर्मिगयुक्तययत। दमविहिद्विधावेव नूनत्यादि यटिवदनात॥ दमविगीयदादकस्यादिनानिदिनकलिते॥ दमद्विहिग्रम
थं वऊनी तस्य लीकितः॥ दमद्विहाकर्मा कस्यावत्वा वेद्यसम। चिते॥ दमद्विगुमवत्वा विदना नियटिकै वृधः॥ दमविगुमवत्वा विदना नियटिकै वृधः॥
युतिन नृजिना दमद्विगुमवत्वा विदना नियटिकै वृधः॥ दमविगुमवत्वा विदना नियटिकै वृधः॥ दमविगुमवत्वा विदना नियटिकै वृधः॥

१४५

पीछादिषु कृमादवा रुमृदुयानकुडरुवा दमद्विगुमवत्वा विदना नियटिकै वृधः॥ समकासु पूरुगवा खलुग्रपुवचिऊ निदम
विषष्टिमा रुवऊनी यटिमा रुवग। गगामध्वदिगीशानिया कदावित्ता सुवि। गवतः॥ दमद्विगुमवत्वा विदना नियटिका पयत। दम
दिगीवत्वा विनऊनी यटिकलिते॥ दमद्विगुमवत्वा विदना नियटिकै वृधः॥ दमविगुमवत्वा विदना नियटिकै वृधः॥ विषमध्वदिशा
रुयात्रकर्मिगयुक्तययत। दमविहिद्विधावेव नूनत्यादि यटिवदनात॥ दमविगीयदादकस्यादिनानिदिनकलिते॥ दमद्विहिग्रम
थं वऊनी तस्य लीकितः॥ दमद्विहाकर्मा कस्यावत्वा वेद्यसम। चिते॥ दमद्विगुमवत्वा विदना नियटिकै वृधः॥ दमविगुमवत्वा विदना नियटिकै वृधः॥
युतिन नृजिना दमद्विगुमवत्वा विदना नियटिकै वृधः॥ दमविगुमवत्वा विदना नियटिकै वृधः॥ दमविगुमवत्वा विदना नियटिकै वृधः॥

[illegible]

गत्यमध्यमहावीर्यहावथर्हमाकृतिं ॥ मयुते सर्वसंपूर्णविक्रयकृतमहापदं । गत्यमध्यमहावीर्यः महाकैकालयागतः ॥
 मन्त्रमन्त्रानयागमसागलीहिमाताहिमध्वगः सावकावन्नुपायुजकैककुसुमलका ॥ स्थानयागसागलीहिः नाहिमध्यम
 कः स्वयं ॥ हाकावाकावन्नुपायुजकैककुसुमलका ॥ कपालमध्यमविक्रयकादर्थसाकावन्नुपायुजका ॥ कासासागलीहिगति
 मध्यमविक्रयानुययागविलागधुविलसगतिमादिभद ॥ मन्त्रकागर्हलायागसफूर्णवयमध्वगिमागृहताययाकानाः
 विक्रयकासुयह ॥ सर्वध्वगः सफूर्णवयमध्वगिमागृहताययाकानाः ॥ महाकैकालसैर्हसुखमयः सर्वध्वगि ॥ गच्छेदध्वगवयो
 गच्छेदध्वगवयो ॥ सर्वध्वगः सफूर्णवयमध्वगिमागृहताययाकानाः ॥ महाकैकालसैर्हसुखमयः सर्वध्वगि ॥ गच्छेदध्वगवयो

श्रु
कु

कृष्णसोमनाथः कुरु कर्मसु नीययवमधुवा। सैकाकोविजानीयादसूराजो विमयग। विन्दुहानगर्गं विरुमागिता
गतिरेविनी। विजानीनकुरुकर्मसु अस्मदभमपुनः। सैकाकोविजानीगर्गं वमधुवा। धाउभाडाईकै नूपेधाय
कुरुनवायुना। सैकावकुरुकर्मविहनीयसफमेतथा। सैकाकोदसूमानसु मधुगर्गमावदसूया। विन्दुदयसु
जानीयाइकर्मवहसीतया। नाभरागवमधुवा। दूधवजधनरुतः। सफदिभामकैयुईहावयत्तमुत्तपु १४८
नभामहाकैकासनायकैशगीसर्वकपमधुति॥ ० ॥ ॥ ॥ तिगईहयागैमहाकैकासनावकी। अन्नायक
कलगापुकिः प्रकवेगैदिनीयकी॥ २ ॥ अथकैकासनागनदभदसूयातिई। हानपुकाविजानीयायागिनीवीननायकी।

श्रुहासवकादवीनायकीसर्वयामिनी। गलिहानहिगादवीमहायमहाकदैवदसूमा। मधुदवीसदवीचकुरयासामहाननः। कैकान
सूखमायासुसैरुवकिमहात्मनी॥ मधुगीगपुकेकासनाशामवधुगीकर्म। स्वधर्महिगविहानैसर्वदभगर्गैकमागु॥ काहगिनिविव
धविदवीकाहविनीकै॥ नेवधुगागपुवहुनसापुवकासीवक। अथायगजगधवकीनीकसुमायापुव॥ अन्वेवनाउगुदवका
गविषयहिहथा। मनुनगवगधवपुर्गवईनकुरक॥ अयन्यापुवपुवहुसायासुवविगर्गंथा। मासुवपुनीमनायसुवहुविगर्गिणी०
क॥ मधुगीगासुवकैवगीप्रकाविनीतथा। काकीवृकपनाकमापर्वगायमागिता॥ महाहृतिवउगर्गैश्रुवकुरुगभनकी॥ अइधन
मासुवकैवकीनीका। मधुगीगा। कनकवृकसानवृधुधुवदिहकी॥ सैलकुरुमधुवृकसुवसमागितापुना० ॥ वजयानिउदुधु

१५१

न॥ अथ वादि जीवकी वाचकी का सुख सुन्दरी। सहजा व्याहारा गम्या वमहावी वल्लु था व॥ कृपा सा सुदुर्गा यकीः
 का सुख गमक॥ गका गमः पूर्व भू वः कृपा सा विभु सुवध की का सुख मा सो न जायत सुख सुक्या॥ वज्र मू
 गजा मू लपटी गे ख वज्र गकि की॥ मू गत पा गे वत थ वज्र भू ख ता मू कमी॥ पा गे रुत ख धी गे व वज्र भू ख त ह रुका॥ द
 मू गकि कपा विकी गकि वज्र भू ख सिका॥ कदा विक ख धि सु थ वज्र गकि ती गम रुक॥ गन्ध वजी कु भ सु थ म क नू ध ज
 मी ग लकी॥ सो र्ग्य मू खा दु वि रु या क न ला वा ति हो म ग अ ध मी र्ध र्म्य पु दा ता व सर्व या॥ गन्ध वी वना॥ कामे भू र्म्य पु दा
 ता व र्म मा रु क रु दा यि ना॥ क न ला ही मा रु क रु दा म हा ही मा त थ प ना॥ वज्र म्या नि पू ना ग ना र्म मा रु क रु दा ही म का॥ सर्व

天

[illegible]

952

[illegible]

श्रु
७
क

हमतापकः॥सर्वनाडीसंवाचपुमीसनहत्यागम्यव।सुयन्त्रिस्तनमितिनासुनाहिदयधग।साधकापत्रमात्रागियागिनीहकि
नमः॥निखीपी।०पपी०सुवनेदाहवनिदवता॥नरुहनानासवकुसाधयद्विधिपूर्वकी।ऊर्जवैवयाडीगुतुतकृष्टादिरांऊर्जनै।
हृतादि।अप्रापवैसाधयत्समाहितः।साययद्विद्यनयनपैवामनवि।अघनः॥महागैसुनाएंगमदुधूपयकृष्टेवदुयापय०।वदुव
मृशिकागैवेम।अपूर्वागयत्नः॥अवयत्सर्ववृद्धानीयथवदत्तपूर्वमः॥हास्यमष्टविधिहृत्वाहाहाहीहीहूँहूँहूँतिसाध
कः।वीऊर्वैक्रिसमानूरमनिसुनहृदिनी॥सिखनयाजिनीकृत्वापूजयित्वामहीतत्।नयथा निम।अदुहृतीनिनीकृयत्नः॥आ
त्मानैविकथयागीयानिम।अदुयथकर्म॥आत्मानाहर्गैवैय।अदुहीवभिस्माकूनी।अवैविचिन्त्यमाननुयार्गीसर्वस्वात्स्य॥

ॐ ह्यारुहगवान्नामीवऊठाकसुथागतः॥ ॥ॐ गिर्ककासुविधिहृतीयप्रकवयः॥ ३ ॥अथअनविकट
इक्षिजस्यसमाधियागवाहकै।धनर्वधकमायानीयागिनंप्रकिवर्जितः॥प्रागविद्गर्गविरुहसुयनःसर्वसमिष्ट।कादर्गुमदगाथा
यासर्वनादपूनाधनी॥आपूर्यमानकाका।अमधमाद्विमीसना।हंऊयत्तुविज्ञानमाविताःसर्वसमृवाः।गम्यमानैमहासोत्वी।
तपूर्वदनायान्यपत्त।विकटइक्षिगःप्रयोलोःनिर्यागैवहवनिहि॥विषमिसर्वऊनानीसुकमसुयहसुनी।कनातिपविपुनषुकर्म
निर्नागमचरी॥हरेतिस्वदागणवापनापूर्वनिर्मितै।ददतिमिवनूपकुविदवकिमहात्मनी॥हिमिनापादपर्यकगमनिसुनिस्
हवत।नससकिप्रगामर्ककिहसुवमशुयी॥नसात्सर्वऊनानीवत्तुसुकमहदनी।किपूनस्वात्मनागपूर्वदनासर्वमिन्द्रियोगतिव

श्रु
२
७

सुखागिहयपुत्रैः सुखागिहयपुत्रैः। सुखागनविनाताहि सिद्धरुतश्चदायकः॥ वसादयवत्कर्मस्तिववेनिश्चयैरुवत्। मि
मुर्गेहवत्। मिश्रं गत्वानो प्रश्नं रुतुना॥ दधानीमृकिहं तुला सुनावे विर्गहावयत्। सुफर्णिभात्मकं चक्रयागसिद्धि कर्तुं पुनः॥ वः
रुत्तुक्रमसंस्तानेहावाकर्मो नृसानतः। सुनादव दानवाश्च वे विर्गवकसंवर्त॥ ॥ॐ ह्यहहगवान्क्षामीवे विर्गवकः
आकर्म। सर्ववीनसमापयावऊआकपयं सुखे॥ ॥ॐ तिपुक्वभयं वमः॥ ५ ॥ अथ सर्ववीनयागिनीहिः १३१
समाकर्म ह्यपुत्रैः। दव दानवसुत्वानी कथं सुखं वदायकः॥ यदि सर्वमयं भस्मापुत्रं च शुभं शुभं॥ अथ हगवा च दवाति
कथं सुखं वदायकः॥ ॐ निवे सैगयमहि अणनयुहपुत्रः॥ शुभं दवीमहानुर्वी वा वाक्का मनकधा॥ सुखं कर्मो नृसानतः
या

नोदं नोदं। सुखागनविनाताहि सिद्धरुतश्चदायकः॥ वसादयवत्कर्मस्तिववेनिश्चयैरुवत्। मि
मुर्गेहवत्। मिश्रं गत्वानो प्रश्नं रुतुना॥ दधानीमृकिहं तुला सुनावे विर्गहावयत्। सुफर्णिभात्मकं चक्रयागसिद्धि कर्तुं पुनः॥ वः
रुत्तुक्रमसंस्तानेहावाकर्मो नृसानतः। सुनादव दानवाश्च वे विर्गवकसंवर्त॥ ॥ॐ ह्यहहगवान्क्षामीवे विर्गवकः
आकर्म। सर्ववीनसमापयावऊआकपयं सुखे॥ ॥ॐ तिपुक्वभयं वमः॥ ५ ॥ अथ सर्ववीनयागिनीहिः १३१
समाकर्म ह्यपुत्रैः। दव दानवसुत्वानी कथं सुखं वदायकः॥ यदि सर्वमयं भस्मापुत्रं च शुभं शुभं॥ अथ हगवा च दवाति
कथं सुखं वदायकः॥ ॐ निवे सैगयमहि अणनयुहपुत्रः॥ शुभं दवीमहानुर्वी वा वाक्का मनकधा॥ सुखं कर्मो नृसानतः
या

[illegible][illegible]

श्रु
पू
ह

अथ सप्तविंशत्युषः॥ एकविंशतिदिनानियमप्रवहन्विशपवमासावजीवतदिनानिवाक्सीखया॥ विंशत्युषदा
युहा॥ वदमासगतायुषः॥ विंशत्युषदादवीवहन्मानुषः॥ सदा॥ दिनानिचतुर्विंशतिदवमासामदाहन्॥ सजीवतिमासाव
लोविदिनानिचतुर्विंशतिः॥ सदा॥ चतुर्विंशतिप्रवाहनमासप्रयमेदाहन्॥ दिनान्यकादमन्त्रेवमस्यकारविधीयन्॥ अथ पूर्व
त्यागैकात्तसंख्यासमाप्तः॥ अथ नयदिनापाकाद्वादभेचतुसंख्यया॥ लग्नमगतं गोष्याश्रुतेननुसूटीकृतामन्दबुद्धिप्रवाध
र्थकात्तुष्यकाभिनी॥ यागिन्यः कथितंकात्तुश्रुतिभूक्तमयाप्रिया॥ तर्थावपुष्यपदवीजायनसमक्षुकोत्त॥ नाभिकामासविह
दवहन्पूर्वमुखीतथा॥ जीविनीतस्यजातीयादिनसुफनसंगयः॥ यदुमाववसेदुदुर्ध्वमुखपवनं॥ नवकात्तासमाप्त्यापत्य

१३५

वाधिकातथा॥ लग्नवर्ग्यकपात्तुपात्तुदुर्ध्वमिनी॥ दमदिनावविहयाचकनाशादिकेतथा॥ द्वादभेचतुसंख्यया
तुष्यस्यकी॥ दक्षिणकर्तुसमाशित्यादियाउर्ध्वमाशिता॥ एकादमकत्तावृत्तदुदयस्यदमस्यथा॥ द्वादभेचतुसंख्यया
की॥ चतुर्नाशविजातीयासवर्गसर्वदहिनी॥ यथादमीदकान्तुग्नोकात्तामुखीतथा॥ अयनेसर्वतुगानीदिनानिचतुसंख्यया॥ सदायाव
वहानाडीउर्ध्वमुखीपकीर्हिताः॥ सर्वतुदमस्यवृत्तादभेचतुसंख्यया॥ इदिपेकत्तुसमग्नतीउर्ध्वदृष्टिगुणपनाः॥ द्विपेवासाहनदवी
पकावतुसंख्यया॥ नाहिसंभ्रमदीदविसेपूर्वभाउभात्की॥ मध्यस्थानितथाहानियथादमसंगयः॥ सुफदममनाडीतुउत्तुमसुखिसा
नके॥ यथादिनानिचतुर्विंशतिः॥ सदा॥ चतुर्विंशतिप्रवाहनमासप्रयमेदाहन्॥ दिनान्यकादमन्त्रेवमस्यकारविधीयन्॥ अथ पूर्व

श्रु
पु
श

उक्तानि विंशति मनु मूर्द्धा समुपपन्ना। समन हवन्मुदङ्ग विनास्य न संभयः॥ लिङ्गिती लावगीख्याता उर्द्ध गप वमभुवी। द्विदर्भे तु समा
ख्याता दिनानि मरु संभयः॥ श्रुत न वदिना साक्षाद्वा द (भव न संभयः) वर्ष कुं मन न साक्षा द्वा स फलिन नूक माद ॥ षड्विंश स्यादः
अथैव मासादि नियथाक्रमं। ह्यत्वा वैवमहादवी उ प ह्यु गनेः गनेः॥ (गर्भं) वैव हव त्पि सुं ह्यत्वा यी जी वि त ह्ये तु। प्रसी समानि
धन न लावयित्वा वज्र पुरा। प्रयोग मा पूर्य न प्राम वृद्धा नो मृत्पुका कथा। न्दं प्रयोग मा गृह्य कथ्य न व समा सनः॥ वज्र मार्ग गतं
प्रार्थना द्वा दश भक्त नृपा वतः। वृद्धा नू मृत्पि यो गत रुं गत काम वच कु र्क ॥ प्रभुं जय स्य महाम कु र्त्विता सर्व गति प्राप्ति। श्रम नैया नि मा
यानि माका का नि गन्ध का पि को। वसन्ति सर्व वत्स पु न्ना ठिका पूर्व मान की॥ ह्यत्वा कर्त्तु सर्व धु त कुं वृ मा प्रूयो॥ ऊन नि धर्म ने

१३६

दृक् २

वात्स्य न ऊ नि पू ग रू प च। उ ह्या सु मह माया क नू मा वैव सु वर्त्ति नी॥ प्र क र्ष या ग व च्चि र्मृ तै सर्व धु तै धि मू। वृद्ध नू प महाम
रू प्या गि नी सु ख दा य के। हव नि सर्व सु ख ता सा ध वि ना सर्व मं गु नी। वज्र कर्म प्रया ग न समा स्या दय स सु खी॥ रा व य धं कं प्र ह नु
हव रू प सी नि हे। प्र ह्ना पा या त्म की द व श्रु ति स म य नू प के॥ ॥ वृत्ता ह ह ग वा न्का त व का र्थी तु त थ ग तः। सर्व प्रा ग
स मा या ग म त्म न मा क न नू र वा न॥ ॥ वृत्ति ष क न ग स फ मः॥ ७ ॥ श्रु थ वज्र पा म्भ द य ४ वा धि स त्वे क
था ग तः। प्र जी कृ त्वा स पू ष्या र्थे ३ प्र नि प ह्य व मा दूः॥ दे वा नी सा ध नं कु हि म म कु त मू म पु रुः। य न सर्व व सी पा ति प्र या ग न व
क म्पु रः॥ वज्र द हं वा ज द वा दी ना नु सा ध न। य न स म वि ध न न श्रु ति सि द्धि प्र व र्त्त न॥ म गुरु र्त्त व र्त्त यित्वा तु का य हा वा

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कथं भूतं गन्तव्यं विद्यामनुमिदायतः ॥ साधिता हवमुद्धनमधमाया
 ननु हिता ॥ उत्पत्तिर्वका सुतु मनु संसृष्टवाहकी ॥ साहसा हन्तु साध्याश्च दवाय सुतु मनु ॥ हन्ता वापक साध्या संगृह्वा य
 सुमनु ॥ कटपूतनाका गनु वज्रदं हयथा गत ॥ वहनि श्रुवधूती घृष्टानमनु सहा गती ॥ तत्को संसृष्ट विहृया पीवमनु त्वे १३१
 तथा ॥ सुदृष्टा यश्च सोवाका पटादिमनु संसृष्ट ॥ कष्टा घृष्टा चतुर्दं भा साध्या हन्त मनु ॥ न कृत्वा पीतता दया युक्त मनु गताः
 एवं ॥ वाक्तामीर्गं के वे वेव को मात्री वाया हिका सुथा ॥ ॐ ह्रीं वेव वा मनु गतामीं वरुता एनः ॥ दिगीय पूटः ॐ ह्रीं यमव नू
 न कूवे नैव हन्त श्रुता एत नो नेष्ट सै वायना सुथा ॥ नूँ पै म पूट न्य सु दादि सु सा मा भि न कः ॥ वृद्ध ह ह स नि शु कृ भ नि श्रः
 हती ॥

नवाह (श्रीगीति) चतुर्थ वृक्ता विष्णु सुथा नूड क द य द न ॥ पृथिव्या फल वायना महा हन्ता श्रुता वः ॥ जाकिनी दीपिनी वृष्टी कीः
 वाजीव प्रसु सुथा ॥ हन्ता हन्त नृपे म विधिवत् साधयत् सुदा ॥ महा मनु स्या गत वाक् मनु तमा तिखत ॥ शृगी वृष्ट्या निव दयात
 मध्या म (भारती) का सय दृ ति श्रुष्ट दे ती तिखत्य म कर्त्तिको गूढ (भवर्त्त) ॥ तस्य माध्या वज्र द हं उ क मूवे वे तु र्जु ॥ ॐ ह्रीं हृष्टा क वा सा
 ती सौ सवा वे ह सिता न ॥ नीत वग्ने महाया नै कया समा सा विहृषिती ॥ पुता वृष्टी सूर्य ता मुर्वे उद ग ह र्थ क ॥ साधु व मा म न ध र्थ न
 वे दिव नृ पिनी ॥ कपा सख दा मध न उ म नू क ह ह विगी सु र्द दि ॥ नृ मि म उ ह न व य थ क मा ग ॥ जाकिनी ती वा जी वे व नृ पिनी पि व दी
 पिनी ॥ नृ वज्र द ह सार्थ म मू द या श्र नि म य ग ॥ वे ज्ञ का न ह द वा ह शृगी म य द ग मिनी ॥ हृद ये गु कृ षू क म् स वा का न पू न नै स त् ॥

又

[illegible]

१६८

नाता हवभासुषिता। भवानूरायिनशवाद्युवर्मावृताकटिः॥ पूर्वकावतिखकुक्कासितवर्णवर्गुर्गुजाः। कपात्तमकसूयव
कमलरूपमभवत्। उरुवगनथाविष्णुकुम्भवर्णवर्गुर्गुजाः॥ खड्गवैवगथावर्ककपालेदमुभवत्। दकिभनूडमातिखकुम्भव
र्गुचगुर्गुजः॥ शिखुत्तकपालेवैवपागमकवधवैवगथा। पश्चिमतिखकुम्भवर्णवर्गुर्गुजः॥ गकिदमुधवैवैवकपा
त्तकधनैवगथा॥ गंगानवृषहानूरेयुक्त्वर्णवर्गुर्गुजाः। कपालेशिखुत्तधवैवपूटीजतिधवापना॥ वृन्दायगङ्गामानूरापीतवर्ण
वर्गुर्गुजाः॥ वज्रबायिकपालेवकुटीजतिपूटीपना। श्रृङ्गयमूमवानूरेवर्णवर्णवर्गुर्गुजाः॥ श्रृङ्गिकमुकपालेवसुकुक्काकटीलिक
नापाम्। शिखानूरेवर्णवर्णवर्गुर्गुजाः। दण्डवैवकपालेवर्णवर्णवर्णवर्गुर्गुजाः॥ तिधविगङ्गा। नैमृण्णवानानूराहविगवर्णवर्णवर्णवर्गुर्गुजाः॥

श्रु
पु
७

स्वप्नमपि धनवसेयल्लोकां कुरुति यथा॥ वायुश्चक्रमवायुदागुक्त्वर्गुचतुर्गुज्जोपाभावेव कपातं च पूटीकृतिरथापवा॥ वाय
वाकंसेलां नूराधुसुवर्गुचतुर्गुज्जोपाकां च कपातं च तथैकृतिरथापवा॥ कृववायनिष्ठा बूटीपीतवर्गुचतुर्गुज्जोपाकां कपात
धनवसेयल्लोकां कुरुति यथापवा॥ सर्वनकयहृद्येव धयास्वमगुत्ता बूटीक॥ स्वसमयं वरुणास्तु द्विमकामहावता॥ मातृगमसर्वमा
गावहृदविद्यातथापवा॥ उर्वविधिविधानननुकेकीसाधयहृद॥ समभनादिषूक्तानमूनानासमयहृदमे॥ यागिरागवगानिह्य
रूकीकर्मसमावहृद॥ चन्द्रवज्रविधाननवजसुखयथादयी॥ कनागिदासुवसुर्वसंकुवाजनवादिगा॥ चतुर्विंशतिपी॥ अदिकम
सपूजयहृद॥ गन्धोदिदोकयहृदमकुजापनुकावयत्॥ स्वनामाद्याविर्गमकुर्तुं हृददिदहिर्ग॥ हृगवान्मध्यपवाहृदयसर्व

१३८

वसाधयत्॥ श्रुथपवाहृदकनाहृगवान्मध्यपिर्ग॥ विपनाकाकातावजकपातं वजनीवरी॥ धनूर्वागधनैवेवसवामकनाक
वि॥ गधैपूर्वोक्तवृषैवदहासामसमर्थकी॥ निश्चिर्गमध्यमायागे॥ सिद्धिगनागसंगय॥ ० ॥ ब्रह्माहृगवान्मध्यपसर्व
रूपाकनाकिक॥ कोयवास्तुत्यागमासर्वदवस्वरावक॥ ० ॥ गिप्रकवगमसुम॥ ८ ॥ श्रुथगुह
यनादिवपवादिगामुयामिनी॥ पुत्रुगुह्मदेवार्ककर्थकासमहामग॥ यागिनादिसुर्यकासुश्रूक्तं नवजायग॥ नानावीकमेहावि
हृदयगुह्मयागहृद॥ उहृदकतिथ्यवज्रिकातादिधीयग॥ श्रुपूर्कसुगकासु॥ यागिनीसुखहृदव॥ साकस्यकासुमाहृद
कापनासु॥ गवहाश्रूक्तिकनथासादीवीकवीकसुतकमी॥ श्रूक्तं विहृदपनुश्रूक्तिकवैतसिकी॥ श्रूक्तं पशुउत्पन्नमृकः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पांडवाश्चैव किमकुर्वत सजीवाम् ॥

[illegible]

श्रु
ह
उ

तदाहिमं । सर्वानावृष्टमायागत्पूर्वकर्मविनाशकः ॥ ० ॥ ॐ निप्रकवर्गनवमः ॥ ७ ॥ अथ वज्रनृत्यं
कृत्वायागिनीपुत्रुगं वंदे । कथं भास्वामहासत्त्वः ॥ एवमिह कस्मै विना ॥ पूर्वकर्मविना । भननवृष्टकतिनागर्ग ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं
महिकुहिकानुगवत्सवं ॥ उक्तं यत्पूर्ववृद्धं भूमहासत्त्वात्संस्कृता ॥ कथं योमिसमाप्तनमृशूनकायमनात्त्वयि ॥ वज्रजटितया
गनसाधनकर्मकर्तृकैः । प्रकैकस्य गुणगम्यं स्वयं हवर्तुगं सहु ॥ अथ तदुद्धया नूटमीतने सर्वमिद्विद्यं । ननयेशासदासाकवन्धन
जटितामया । वज्रकायत्वमाप्नाति प्रकमार्गत्वसिंहवंग ॥ तस्मात्सर्ववासनां सर्वानन्दविनिष्पन्नं । प्राप्नाति प्रकमार्गत्वं गुरुकर्म
कुर्यात्तदा ॥ वज्रकायत्वमाप्नाति त्वं स हवर्तुमहाजनाः ॥ श्रुत्वा कस्यनेऽस्याहु कस्यना कस्य सिंहवा । नादमासाद्य यन्मयानं भूतक

१०१

नकथं त । नवभूके कशूका तुप्यं वभूका शिभूदिका ॥ प्रवमादिमहाद्यं भयावत्सहस्रभूदिका ॥ नादमैव निरावननिष्पन्नं विनाशकः
गी ॥ गतादिकस्य सिंहगं जाकर्तुं वायागिनः ॥ गतेव निर्विकल्पात्मायुगलान् च वलितः ॥ सवर्जपूर्वकभूकीयगविह्वलमनः
नयैवासास्यद्विमीनेमं कायकोयिको ॥ कथं गवी वहापिनं यन्मया वासुतुर्ग ॥ शिरागिकासदायं भूदवगासमसं कृता ॥ प्र
कैकदवस्य ह्ययथासमाधिमभुत् ॥ गथा सर्वमूखाकार्या श्रुतिमाकृष्यागिना ॥ आसुनकभूदवीनीसुद्यं भूमादिका नयन ॥ य
थानवृत्तावर्तनं यथावत्तमवत्ता ॥ देवगाहावकाभातुकावयित्वादिभासकैः ॥ यथायुधं यथागिनागसाध्यासुविनिर्मिता ॥ कस
पदिमूखादीकडं ह्यजातिर्विक्रमः ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं गुमहाद्यं भूमायामभूवहिता ॥ श्रुत्वा त्वं यिनीसातुगत्तानादविराजयता वज्रं

श्रु
क
लि

विहृदः। कर्म। दवा सुनमन्याश्च कनवावा निमागताः॥ दमयतु यथा पूर्व श्रुति सन्निभुत कर्म॥ श्रुतं वक्ष्ये यथा न्यायं महि
संधिभुत कर्म॥ न ह्येता वृद्धा कस्य श्रुति मूर्त महार्थकै॥ संप्रपन्नं तु माया वै सत्त्वा नीत्या हि तावकः। वज्रसत्त्वपुलास्यवधु
लिङ्गमनुवर्तकै॥ कायवाक्किंलुगुच्छातु शिषूनां कस्य संहवा। श्रुतीनां पूर्व एवाहु सर्वेषु न कपूर्ववपुमवत॥ गत्या गतिवता
निर्ह्यसमाधिः ध्यानगत्य नः। यथावादी तथ कारी श्रुति सा सत्यवादिनः। का नृध सर्व सत्त्वधु मार्गवता न तस्य वः॥ सर्व
तुम तुल्यश्च सर्व भक्तु पावगः। श्रुताथनी पिता माता मद्रा स कतका वकः॥ न व मोदि गुनिः पूरुः॥ वृद्ध जने तथ गतः
रावना वज्रक का वीया गिनी वक्र मध्यगः॥ मधु तवा धि विहृनु या गिनी सुख नाजिका। नाद वृना द ह्यो नैव वज्रक का वः

११३

सुव

कंप्रशुः॥ श्रुति (भर्ष) एव ह्यनं श्रुदिनाथस्य कावरी। श्रुतं व विहृभू क्लैव प्रकृतिगतः॥ स्वर्गधनु समाख्याता श्रुतिनात
ननेवतु। शिषु वगक्तमयश्च कलाज कार्मुवैः सदा॥ नर्वयाग ववे (अ) ध्युम मन्त्र पलाव वत। श्रुतान तावता वा सो वृमगि
मिमजाननी॥ ० ॥ वृत्ता रुरग वा ह्यन सहज रूप दभेकः। पथे न सख वा दिव दे। भदे भक वज्रधुक॥ ० ॥
वृत्तिप्रक र्गद्वय भः॥ १२ ॥ श्रुथा विषया गी वक्ष्ये न सिद्धा नि साध काः। ससूरु डपया। गन विर्या वत म
उच्यते॥ नरा गी न ह वं चर्या ह्यत गा सिद्धि की दिहिः। वाक् श्रुद्वय या गता सा वर्या तु प्र सभ्यते॥ ससूत्रा सर्व मात्मान मि
जिगीमसः। गिनी। नै पूज्य भः। नै व प्र र्द्वय मान सत्ता। एव विर्या न रूप ध्यु यतु त गता सनी। दमनी पम्य ग स म्यक् श्रुः

श्री
रुद्र

ल. निश्चय रूपकै। उदनि विरुमा शिलु काया काय निरीन ना। महामूडा सुमाखा ना सम्वर्ण सप्त नासनी। पंचमूडा दिग्भयसू
कपात खडा द्विधा विभाः। पंचासगा दिह कंचया गिनी सुहृकी ठवान। शावना न क विरुन जाय न न विरुन न नः॥ अस्माकं हक
हाव सुन व क निष्म म नः। स्रभ नादि ग ग न कि निर्हया का न र्व न सी॥ विरुन न वा स्रम र्व य य स र्व व न गु वि। सुकी ठ गि सु
खाव लो च र्या व न सु वृद्धि मान। आदि या ग सु मा शिलु पश्चात् स न स्र प्रा कर्त॥ ० ॥ ॐ ह्य ह ह ग वा न्मु न च यो व न मुः
धव कः। सुर्व प्रा म स मा श ग म दि द्रिय य म स हो ख गः॥ ० ॥ ॐ नि प्र क न म श या द मः॥ १३ ॥ अर्थः
जाति विभे भवे च कथं न मृ गूज क वा न् विरु ह ड प्र या ग न स जा ति न र्व न ॐ मी॥ न ग या पंच स्र फा स्र य या द गो पंच द मी। स्र फ

१०४

वि४.

ना

द भी द्या विं भव न था प री। अ स्र या श्र विरु या द वा ना नु ग म स्र ग हा व रु थी शि ना पूर्वा नि द्वि ती या षष्ठ म व च॥ उरु ना मि
न थ मी मि मा नू र्वा व ग म स्र मी। तृ ती या द म मी र्वे व व रु थी श्र या विं भ का। द्वि ती या षा ठ मी व अ स्र द मी का न विं भ म॥ च
तु र्वा मी न दा स्र या ना ना क सा रु क्त स्र मी। अ ग र्वे तृ ती या स्र मी व ना ग म व व रु पंच मी॥ षष्ठ म का म विं भ व स्र ना न स र्व व क थ म। द म म का
द म म र्वी मा र्जा ता न व मा न था। व रु र्व मी षा ठ मी व वा य र्वे व ड द ह र्व॥ द्वा द (म नि रु र्वे य कः वृ ष रु क्त मा प्र या न। प्र थ मी मि मा र्व वा यु
जा ति स्र मू प्र क थ म॥ श्र या द म र्वे व द म म रु म हि र्वी सा हि र्वी य न। प्र थ म व ष दि म र्व अ श्र जा ति प्र क थ म॥ विं भ मा द्वे विं भ मा च म र्व क ट ति
ग हा व। द्वि ती या न म र्वी हि मा व ग ज्जा ने म् जा य म॥ श्र या विं भ मा नू र्व व रु विं भ म हा व ता। ए क विं भ न कृ ती व र्वे क पा शु प्र क

सूत्र

॥ कातनाडी गत मृक प्रियतम ह क ध्वंवा । गर्भ
 तुलै कर्कट ध्वंवा म नै के मृ च नी स गी ॥ कीटं च मृ सि ह दृ षा हि न का य पु का ग का । मी न मि धूर् न वे व हि ध न के न्या गु मि ति र्ग । गु नू व वि हो म उ म्
 मा हे गु ना दू म गि मि यः । वृ ध म ग स न पू स का य रा न ह म गु त ॥ न वं जा ति कू ता नी व न ह व द्वा धि पू र्ण की । व ऊ ह द त धा र्वा र्ण प्र या ग म न
 का त व न सो ॥ वा म ना डी ग र्ग वि ह म ध्य मा न म या ग वा न । व ह नि वा धि वी जा नी व धि स त्व स्या ति कू तः ॥ ऊ व नि क र्म मा र्ग र्ग क नू म ग न मा
 न सा । र्ग पु दायैः स दाय क न कू र्त्त ना पि का ति कै ॥ ए व न म ग मा षा गु ध्वा ना का व का य गी । दृ षा भा दि षू नू य श्र या द र्ग दृ ग्ध न न तु ॥ गा ड र्ग वा धि
 स त्वा नी ध्वा न या ग म च वि ह क । न गे षू तु त्या न्य म हि द व वि ह न द न वी ॥ म गु त षू व म ध्व वे रा व य द्वा र्ग द्वा र्ग । प्र ह्ना पा य वि ध न न म न्ना वा

धनपूर्विकी॥ ० ॥ ॥ अथ ह्यहमवाप्तत्वावाधिरूपमहात्मना। कासाकासविगतात्मा ताहावकावकस्मिन्॥ ० ॥ ॥ ॐ ति
 शकनमवगुर्धमम॥ १४ ॥ ॥ अथ गुण्यार्गवमृगनसर्वसुखात्मजी। पात्रमार्थिकयागनतथगार्थिप्रवमयन॥ महाह
 नवयागनमनुमासाक्षयहवान्। अष्टवत्वाविभपदः॥ लिखत्सुकेतुसर्वतः॥ तसुमनुषूपाणिशमकवकावकी। अक्रेवमुकला
 दिवायकाविभक्तिमध्यमी। मृत्यवेत्तीनतीकत्वाश्रद्धाश्चनिमीकन॥ गावत्सुर्वक्रियागनुश्रापदाकषुमस्तकी। प्रविष्टे सर्वधनु
 श्चकावथाविहवानकी॥ प्रवमृदुकाकियुक्तासुमहासुनवस्यार्थकी। मध्यमासुप्रविष्टसुहायधन्यादिवर्जिनी॥ हेनसुधार्थमान
 विमयाकमैककी। वरुमाशक्तिविह्वानपयकियुक्तः॥ प्रवममाजार्पवाशुमृतमनुदिकासकी। सर्ववीनस्यकास्यानिमनु

त्रि

महाविष्णुविवावि(ग)॥ २२ ॥ भक्तिसुहृन्कवाय॥ २४ ॥ शिवाहमहासाहस्येकनामाः
व्याकवलिन॥ २५ ॥ भक्तसुहृन्मखाय॥ २६ ॥ हानसागवपुहाय॥ २७ ॥ महापिसितवृधिनवसाह
मि(ग)॥ २८ ॥ सर्वमानवसुधीति॥ २९ ॥ गिरिपहावकावकाय॥ ३० ॥ सर्वनागनी(भामस) १११
हनविद्यापताय॥ ३१ ॥ अशुमानाधवि(ग)॥ ३२ ॥ समेनूकपितनादाय॥ ३३ ॥ काधविग्रहध्वज
य॥ ३४ ॥ महाकागमिसुकात्मन॥ ३५ ॥ वृद्धकाटिसहस्रकृमनिष्पादय॥ ३६ ॥ हानामृतवर्षापम्भ
य॥ ३७ ॥ सर्वकर्मपुवर्तनाय॥ ३८ ॥ वन्दनकवाय॥ ३९ ॥ सर्वविकल्पहृन्कवाय॥ ४० ॥
मा

स्फुट

मृगवलीसुगमगीवाय॥ ४१ ॥ पवनकणयकुमकुनागनाय॥ ४२ ॥ महावकाकवाय॥ ४३ ॥ इष्ट
नीविद्याव(ग)॥ ४४ ॥ धर्मदयकवाय॥ ४५ ॥ काधसुहृन्मन्मय॥ ४६ ॥ वृद्धकालसर्वसुर्वात्मन॥
॥ ४७ ॥ यमुवादपवादमहामन॥ ४८ ॥ द्वैतद्वैतस्वाहा॥ एवंमायाश्रयमुक्ताप्रहृन्निगुविह्वला॥ नानानामवि
क्षनकाहानवासत्वेरुह॥ ० ॥ व्याहृतगवान्मनीसर्वतथागतंयुक्त॥ सर्वमन्त्रसमायुक्तधुक्कर्मसिद्धि॥ ० ॥
वृत्तियकवर्गीयवदभम॥ १५ ॥ अथाहिहविधिर्वक्त्रवक्षसासर्वमिन्द्रिया॥ विन्याकपयागनसाधयन्नुवज्ज
विह्वलवृत्तिजानीयायागिनामवमाकनी॥ कालिकानीययागनवायुवाहननीयति॥
गा३

वतमा।

श्रु
श्रु
को

यथावाच्यं न वेत्तां नमो कालं तस्य गताः। सा हि ह्यास्य व कूर्मो हि जायते ह्यतः व कूर्मो ॥ उगम्या कर्गं नृपं मृश्वकिं मयमानसाध
गत्या गतिविधानादुदिव्यं गन्तुं नृपं ॥ उक्ता मात नृपं नृपं कार्यो दिव्यं नृपं पुयां गतः ॥ उक्ता विह्वानसमाश्रित्य इत्युक्तं नितमश्च
माः। एतर्कका वरकायस्य समाधेयं नृपं नृपं ॥ पूर्वनिवासान्मृत्युजायते तत्त्वगवान्। श्रुतेर्निर्णयं नृपं कृत्यानां वपुःष्ठमवव ॥ प
षीपव कृपातीर्थं यदिका तु निधाऊयत। द्वादशभुक्तमायामश्रुतेरुत्तरे वड कृपा ॥ पषीपुत्तापमाधनं गताका द्वादशभुक्ता। क
मत्तव मूर्ध्नि वकासा व कूर्मो मात्तवने ॥ श्रुतेरुत्तरे विह्वया हि विह्वयात्तवने कः। पद्या वमितायायां नृपं यद्वर्मधनुना ॥ ला
वयदि नृपं कुरुकात्तवने निवा वमन्। मधुना कविर्नृपं कृत्याया गिती नृपं नृपं ॥ विभू नृपं मिदं विह्वयं गच्छति प्राप्तिनी। स्व

११२

वाप्रातिनेवात्मीयकी नोत्तमयाहिनी ॥ नृपं कवातिनं द्रुपवमाया विनामकं। सर्वथा कुरु विह्वया धर्मादया कवक्तिनः। पायमार्ग
समाश्रित्य नृपं कल्याणं नृपं नृपं। पर्वव कूर्विजानीया नृपं नृपं। पर्वव वायवः ॥ कवतिना श्रुतेर्वीजं ह्यतः कविनीया गवान्। पर्ववीजा
निविदूना महिष्क कर्तुं दिव्यं मी ॥ उर्वयोगवत्तं पूर्णं सर्वथा गच्छावर्तुमी। तावत्तुत कमखितं नृपं नृपं पविर्वर्जिनी ॥ ० ॥
वृत्त्या हृत्तगवा च कुरु सर्वथा वनरावकः। सर्वकायसमायागमत्तुत्तव कुरु वरु कः ॥ ० ॥ नृपिषु कवर्गो वा उभयः ॥ १३ ॥
अथ दवीपुमिपत्य पूजा कृत्या महत्तथा। दमय महत्तवामी हामी महत्तव लायतु ॥ नृपं हामी पवत्तमि श्रुत्वा त्वि की सदा विदुः। महाव
पशं गतं नृपं नृपं नृपं। सर्वे कुरु सपत्नी नृपं नृपं नृपं। नृपं नृपं नृपं नृपं ॥ नृपं नृपं नृपं नृपं ॥ नृपं नृपं नृपं नृपं ॥ नृपं नृपं नृपं नृपं ॥

श्रु
दु
उ

ममदताकमकुपुतिरुकरा। सिद्धानासोसमाख्यानामसिद्धकममुसायग॥ दद्यन्तैवसदामधुश्रीहिपिवाधिविरुके।
अमिनीमकिनीरुयइवपाभादिवायव॥ मूयपीकाखीवेवचदनश्रुकमुविका॥ वक्रपुष्यसमाख्यानीश्रुमाश्रुतश्रुपायसी॥
वृन्धनैतखदकाहिवमवकुसुमासनः। कमनामेनुदवासुनमिकुमुसामधुनः॥ श्रुनीश्रुविधानाश्रुनातोवीहिनदाइनीपु
गुहृदतिविज्ञानीयोजमानिघालिकाकगी॥ वृन्दियैसर्वनयेकिगयकिचनदासनी। नानावाद्यमहानादीरुजनैकवृभादिना॥ म
हावसुहाविगातुसर्वपाभायधियती। ननगुष्टरुवसिद्धिः सर्वकर्मिकहामया॥ मनसीकीठनगदसर्वसाकायधुषु। यस्मिकास
रुवसोखीगमिन्कास्यवरुन॥ साधनानुगृहकर्तुहमाध्यात्मिकदर्शनान्। साकासाकारुवैज्ञानसाहायकषुमधुमा॥ वधुय

११७

वमहाविहयनमार्षीसर्वसीधिसु। रुकयित्वागतात्यन्तैवाप्तनीवृद्धिनिर्मिती॥ लकासकपहाभषुद्धाखीरुह्नातुमहसि। तयैवः
क्रियनगुमायाहामबुलुगमा॥ ० ॥ वृत्त्याहहगवान्कमुश्रुतिरूपसदाहिनः। सर्वधंशुसमायागमल्लानाद्वैतसकः
म॥ ० ॥ वृत्तिपुननगीसफादम॥ १० ॥ अथपप्रवसायीवश्रुनवयथाश्रुम्। नतवजपयागनसिद्धि
सुर्ववृत्तिकारः। नमगियागितीसैम्यनमार्थनसहितः॥ ननया। गनमतिमद्वियानातुहृहृतिः। ननानातुहृयमानवासानावाधि
मागनः। वज्रनलैयसदीर्घकानमषुसैयुर्त। वदगस्वधुनिकीनाडीउर्ध्वमुखातताटगी॥ स्वकनगधार्थवजाकनगकावदुवृद्धि
नन॥ कनाम॥ ननूवाधिविरुषुकीउना। लघनाहदोषीवहिरुवकमयैरुवत्॥ रुवातैघनहर्गुसादिकवीदितदिना। नसिद्धि

श्रु
०
०

॥ उवाह विष्णो ना सर्ववन्द्यः ॥ महाबागनया सावसुहृद नि सदासन । यागत कुसुहृद्वश्रादमदभकलथा ॥ ज्ञायनयागिनीत
नुहुसा सुसुखार्थक न निश्चयात् । बहुः कायस्य यागननासुखी च वदामहे ॥ उक्ता निष्ठा गजाह्वाने न तव ऊसुपका सेका निवीजसु
हृन्नामय दागवै किना ॥ वाधिविहं सदायम ईडिकाया न क न वृवा ग नूठ मूडे व ग्टी या साहज्य नि लक्रमे ॥ इती वृन्दा मखने
वैपाना श्रुका वयनितः । वलवा चै कय सर्ववभा सिजा नि पुयत्नः ॥ हामै व सर्वगाने वयै री वग्धा दिका वयन । गै न कृष्ण क
पासा दिवी जीवा वलै यल नः ॥ गवै नु हामे इय न वलि न क्री वका वयन । गया वन्दि त मागु म नाह म नूप वलै ॥ यु लि का वा
पि सुसुख सुखी वी न म हा सिर्ग । राधि ना ह ग म ध्वषू स डो मधी वल व डिकी ॥ मगु र्धु नो स व नाना या व पु का गिरी । धर्म य स

१८०

उयस्येव न स मनुष्य नामगी ॥ ० ॥ ॥ वृत्ता ह ह ग वा न क र्म म द्वा व श्व सदा हितः । सर्ववी न समायाग योषधीना नु नि स मः
॥ ॥ निष्ठा क व म म द्वा द म मः ॥ १८ ॥ श्रुथै सा व पा न का टि ह क थ ग ज क ल क र्म । रुय गी व पु यो रा
न सा ध य ह न ल क र्म ॥ ह का री या नि म ध्व नु य का री म ल क हित । गी का री प द म ध्व नु व का री द द य वृ व ॥ ध्व र्मा री म हा या गि
स न स वि व का री । ह न नि स र्व मूर लै य ना य क नू व लै ॥ गी वा या नु सदा श्रु क हित क नू न वा व सा । ह या का व गी वी श्रु व
ह ना या ग म म ॥ ग क र्म न या ग न वि हा स म पु धि का । म न वि व ड स लै नु म म व श्रु ध क र्म ॥ ग ग न स व नि त हा नू ग म
वि जा पि मा न ॥ रा धि ना म धि क क र्मा गि नी नि व ड व नै ॥ स र्व स ल मू ह मा हा र्थ ना म मा र्ग मू द र्ग क । त ल ह नू स दा लो क ह न

श्रु
७
५

नाथनाथो हाविनाह्यनाथो गुणागिनी वक्रमधमरी। उद्यमि साधनी गय न वृद्ध मुखायत॥ विनाभयनिविद्याश्चमद्या
शानाभयनिव। अपहृत्तमश्च सर्वेषु सानन्दादिन सकृन्म॥ य ह्यवसायो साकषु सर्व साधयत कृन्म॥ तदापातासिद्धिस्तान
सफधाह विधा वरम्भ॥ नुकी गन तुकी उकिनेनात्माश्च पूसासुना॥ नमः कुजापे कुवीन ३ हामयागे दिमवव। यथासुखेषु
धयी वज्रधनत्वमाप्नुयान। नागन वागमासा क्व वेदिद श्चतुदाहर्क॥ तदावागन वागी वसवामानेन वाष्कन। सापायमानसे
कर्मा कृत्वा गुहादिसकृन्म॥ श्रुत्वायै न कुवीन मध्यमाह्निमि सादनात॥ वाष्कपूजानिनी स्नाने एव वृद्ध वज्रधमादिकी। तेषु
स्नान वृद्धश्च सत्साकाशै हवी॥ तीर्थिकेषु न बोधेषु ह्यमल्लेषु सर्वथा। विवृद्ध सर्वमार्ग एपमानानी विदेवका। वचने

१८१

सर्वविह्वलदाश्च स्नान स्नानिनी॥ ० ॥ ॐ ह्यहगवान्नाकः सो किकवसदास्मिन् ॥ सर्वजकसमायाम्भगलभूव
वर्हिनी॥ ० ॥ ॐ निपु कवममकान विमतिमः॥ १० ॥ अथपरुञ्जनगुम्भकथनं गृहसाधकः॥ श्री
काभगर्हणागनवज्रवायुस्य सकृन्म॥ सर्वेषु विवर्लषु यद्यन्यताकपानके। भगूनी चतुर्दश्यामाकाशागेषु संहिनी। वृ
द्धयै समाख्यानाय वनि स्वस्वरावर्क। यागामधपूजानेयपुर्हर्कने सायुश्चन॥ अत्रतः सर्वकासपूयसंवाताशुदम्भत। सर्व
हर्गतनावायुः सर्वतयावर्लकः॥ ह्यहह्यह्यादियागनयागिनीमा कृदायकः। नादाविह्वलविह्वयापहास्वनाताकययी।
नमोनाथो हाविनाह्यनाथो गुणागिनी। आत्मानम्भमयागनह्यार्गवपमस्यत॥ अस्त्यै सर्वविह्वयादप्यगेवपकथः॥

श्रु
०
क

काशानिदवकी। श्रुकादिबसाकादिनकाशाननरुकी। हवनिर्वागसर्वप्रयोगीतसकावयत॥ सीधला
पामिमीसर्वविद्यासम्बन्धः। गतिवपसमाशितपसतर्कश्च० स्वयं॥ हनकीसम्बन्धेववजसत्तादिनायकी। पिसनर्कश्च
नेरुपिविद्यासर्वयोगक॥ पद्मिहानसमाख्यानेनर्कश्च० विहानकी। दयादयन्तुसहर्गसर्वदवाहवहनु॥ जाणासर्वकदाचू
राशिवुवनेवनर्कश्च०। नयमानेमहाविम्वनिमिहिसुकरयलुतः। आकाशमकशा। गनजायतपनमाकुर्ग॥ शगितीवकुमक्षः
हमरुद्रूपे० कीर्ति॥ वम्भकर्मसदाक्षप्रभानन्दकूबर्गकुहि॥ यस्यस्यसुकर्मागितस्यतस्यवहावयत॥ सर्ववृद्धावसीयति
साधनवाधिमस्तक। मासुहर्गगोहत्वाह्यमानाहुपप्रधृक्॥ सर्वपापप्रभसन्तुगतायुषीनिवर्तक। कोमनासर्वसिद्धिक्रिया

१८४

मिनीहवशुद्धय॥ सिद्धिरुद्धास्वविरुनविकसीनेवकावयत। अन्यथाहवयागताविरुसर्वप्रवर्तक॥ गार्थिकानांशमेन
हसमभनेवावगयत। कूवासनापनिह्यसुत्रूपयश्चदभयेत॥ ० ॥ कृष्णारुहगवान्यमनृहमानरुथगतः। सर्व
हकसमायागमदहकसुसदाहिनः॥ ० ॥ नृतिप्रकेनगद्वाविभतिमः॥ २२ ॥ अथवक्ष्यमदवीवेना
वनसुतकी। नृपोतीर्गुयहानेमहाहानेतदायत॥ विनाशमानरुथवमहासुत्वस्यसीरुकी। नामकूपायसर्वषीनिर्गदुकि
मदवदुकी। नृपोतीर्गुयहानेमहाहानेतदायत॥ विनाशमानरुथवमहासुत्वस्यसीरुकी। नामकूपायसर्वषीनिर्गदुकि
मदवदुकी। नृपोतीर्गुयहानेमहाहानेतदायत॥ विनाशमानरुथवमहासुत्वस्यसीरुकी। नामकूपायसर्वषीनिर्गदुकि

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ यद्वेदादिमहाश्रवणः ॥ यादधीपुस्तकं दृष्ट्वा नादधी लिखितं
पुनराभावेन यमहं प्रियः ॥ ० ॥ ॐ नमस्तु सर्वभूतगणम् ॥

१९३०

धर्मरत्न बज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

DH II-93

१९३०

१९३०

१९३०

१९३०

